शब्दामृत-2010

श्रीराम

2010 का प्रेमभरा

उपहार

निर्मल

जोटवाल

राम जी राम राम

22.6.2010

निर्मला

एकादशी

DATE

हलो यारा हलो यारा खबरी
राम जी ने इस साल के सारे
नये शबद लिख कर भावर्थ:
लिख दिये हैं।

आप अवश्य ही इन शब्दों
को पढ़ कर सुन कर सुना
कर अवश्य ही ज्ञान ले लेंगे

धन्यवाद सहित

राम जी
रामप्रसाद
7.6.2010

DATE 7 1 2010

हेलो यारा। हेलो यारा

खुशखबरी?

राम जी प्रस्तुत करते हैं, 2009 के नये नये शब्द, गुरु नानक देव जी के। आप सब पढ़कर लाभ उठायें

धन्यवाद सहित

राम जी राम राम
श्रीराम
7. 1. 2010

शबद ?

राग सूही छंत महला ५ घर ३

तूँ ठाकुरो बैरागरो, मै जेही

घणा चेरी राम।

तूँ सागरो रतनागरो।

हउ सार न जाणा तेरी राम।

सार न जाणा तूँ वडदाना,

कर मिहरमति साई,

किरपा कीजै सा मति दीजै

आठ पहर तुध धिआई।

गरब न कीजै रेण होवीजै,

ताँ गति जीअ जीअरे तेरी,

सब ऊपर मालिक ठाकुर मै जेही घणा चेरी राम

श्री राम

DATE

हे प्रभु आप मेरे ठाकुर हो, आप
बैरागी हो, मै आपकी पागलचेरी
हूं। आप सागर हो रतनो के समुद्र
हो, मै आप की गति मति नही जान
सकती।
आप बहुत बड़े दाते हो, मेरे
ऊपर दया करो, मेरे साईं हो, किरपा करो
ऐसी मति दो, मै आठपहर आप का
ध्यान करूं। मै सब के चरणों रज हो
जाऊं तब मेरी गति हो सकती है।
सब के ऊपर पारब्रहम मेरे ठाकुर हैं,
मै पागल आप की चेरी हूं।

राम जी राम राम
श्री राम

DATE

शबद 2

वडहंस महला 1

साहिब सर हालिह पंथ निहालिह
असां जी ओथै जाणा।

आवहो मिलहु सहेलिहो,
सचड़ा नाम लएहां,
रोवहु बिरह तन का,
आपणा साहिब सम्लेहां।
जिस का कीआ तिन ही लेहा
होआ तिसे का भाणा,
जो तिन कर पाइआ सो आगे आइआ,
असी कि हुकम करेहां।
आवहो मिलहो सहेलिहो
सचड़ा नाम लेहां।

राम जी राम राम
श्री राम

4

शब्द

आओ सारी सहेलियों मिल कर सच्चे नाम का जाप करें। अपने साहिब को याद करें। उन का रास्ता देखें। क्योंकि हम ने भी वहां जाना है। अपने साहिब का नाम लें शरीर में विरह हो गया प्रभु याद में रोता है। जिन्होने यह सब किया है वही लेते हैं उन्ही का हुक्म चलता है। जो हम ने पाया है वही हमारे आगे आयेगा। हम हुक्म नहीं कर सकतीं। आओ सारी सहेलियां मिल कर सच्चे नाम का जाप करें।

राधास्वामी राम राम
श्रीराम
7. 1. 2010

classmate

PAGE

शबद 3

ऐसा हीरा निरमल नाम,
जासु जपत पूरण सब काम।
नमसकार तां कऊ लखवार,
इह मन दीजै तां कऊ वार।
सिमरनि तां के मिटे संताप,
होइ आनंद न व्यापहि ताप।
जां की द्रिसटि दुख डेरा ढहै,
अमरत नाम शीतल मन गहै।
अनिक भगत जां के चरण पुजारी,
सगल मनोरथ पूरनहारी।
खिन महि ऊणे सुभर भरिआ,
खिन में सूके कीने हरिआ।
खिन में निथावें को दीनो थान,
खिन मे निमाणे को दीनो मानु
सबमे एक रहिआ भरपूर, सो जापै जिस सतगुर पूरे
हरि कीरतन ता को आधार, कहो नानक जिस अपर दरबार।

CLASSMATE PAGE

भावार्थ ।

नाम ऐसा निरमल हीरा है, जिस के जपन से सब काम पूर्ण हो जाते है। उन प्रभु को मेरी लाख बार नमस्कार है उन पर अपना मन वार दूँ। प्रभु के सिमरन से सब संताप मिट जाते हैं। आनंद होता है कोई ताप नही व्यापता। उन की कृपा दृष्टि से डाव का डेरा गिर जाता है। मन अमृत से शीतल होता है। उन के कई चरणा पुजारी हैं। सब मनोरथों को पूरा करने वाले हैं। खिन मे खाली भर देते हैं, खिन में सूखे हरे करते हैं। खिन मैं बिना जगह वाला को स्थान देते है। खिन मे निमाणो को माण देते हैं। सब मे एक भरपूर है वही जानता है जिस के सतगुरु पूर्ण है। जिस पर आप प्रभु दयाल है उन्हे नाम कीरतन आधार मिलता है

classmate

श्यामजी रामदास

7

DATE

शबद 4

महला 1

जुड़ जुड़ विछुड़े विछड़ि जुड़े,
जीवि जीवि मुए जीवे।

केतिआं के बाप केतिआं के बेटे
केते गुर चेले हुए।
आगै पाछै गणत न आवै,
किआ जाति किआ हुणि हुए।
सभु करणा किरत कर लिखिए,
कर कर करता करे करे।
मनमुख मरिए गुरमुखि तरिए,
नानक नदरी नदर करे।

राम जी राम राम
श्री राम

classmate

PAGE

DATE

भावार्थ

आत्मा जुड़ती है फिर बिछुड़ जाती है,
जीव जीता है फिर मर जाता है।

कइयों के पिता, कइयों के बैर,
कितने गुरु और चेले हुए।
कितने आगे पीछे तिन की गिनती
नहीं हो सकती, किआ जाती वथार
हुआ हुए। यह सब प्रभु आप
करते है कितना लिखें? मनभाव
मरता है और उसका तर जाता है,
नानक जी जिस पर कृपा करें।

राम श्रीराम राम
श्रीराम

DATE

शब्द 5

सलोक महला 2

जिन वडिआई तेरे नाम की,
ते रते मन मांहि, पाइए गुर परसादि।
नानक अमरत एक है दूजा अमरत नाहि
नानक अमरत मनै माहि पाईऐ गुर परसादि
तिन्ही पीता रंग सिउ, जिन को लिखिआ
आदि

राम जी राम राम
श्रीराम

ੴ

भावार्थ

शब्द 5

जिन को आप के नाम की बड़ाई मिली है, वह अपने मन मे प्रभु के रंग मे रते रहते हैं। यह केवल गुरु की कृपा से मिलती है। नानक जी फरमाते हैं अमृत केवल एक दूसरा नही, सतगुरु की कृपा से अमरत मन मे ही मिलता है जिन को आदि मे ही लिख दिया, वही रंग से पते हैं।

राम जी राम राम

श्रीराम

classmate

PAGE

11

शबद 6

जो हमरी बिधि होती मेरे सतगुर। सा बिधि तुम हरि जाणो आपे

हम रुलते फिरेत कोई बात न पूछता, गुर सतगुर संग कीरे हम थापे।

धन धन गुरु नानक जन केरा, जित मिलिए चूका सब सोग संतापे

हमरे मन चित हरि आस नित किउ देखा हर दरस तुम्हारा

जिन प्रीति लाई सो जाणात। हमरे मन चित हरि बहुत पिआरा।

हउ कुरबाणी गुर आपणे जिन विछुड़िआ मेलिआ हरि सिरजणहारा।

मेरे राम हम पापी शरण परे हरि दुआर

मति निरगुण हम मैले कबहु अपनी किरपा धार

हमरे अवगुण बहुत बहुत है, बहु बार बार हरि गणत न आवै

तूं गुणवंत। हरि हरि दयाल, आपे बखश लोहि हरि भावै।

हम अपराधी राखे गुर संगति उपदेश दीओ हरि नाम छडावै

तुम्हरे गुण किआ कहां मेरे सतगुर जब गुर बोलह तब बिसम होइ जाइ।

हम जैसे अपराधी अवर कोई राखै, जैसे हम सतगुर राख लिए छडाइ।

तूं गुर पिता तूं है गुर माता, तूं गुर बंधप मेरा सखा सखाइ।

राम जी राम राम

श्री राम

DATE

शबद 6

व्याख्या।

अगर हमारे से कुछ हो सकता यह तो। आप ही जानते हो। हम रुलते फिरते रहते, हमे कोई न पूछता। हम तो सतगुरु के चाकर हैं। धन धन मेरे सतगुरु है जिन के मिलने से सब शोक संताप मिट जाते है। हमारे मन मे सदा यही आशा रहती है आपका दरशन कैसे होवे। जिन्होंने प्रीति लगाई है वोही जानते हैं। मेरे मन मे हरि बहुत प्यारे लगते है। अपने सतगुरु पर कुरबान जाता हूँ जिन्होंने विछुड़िया हुआ हरि मिला दिया। हे मेरे राम! हम पापी आपकी शरण मे पड़े हैं। हमारी मति भी निरगुण है हम मैले है आप अपनी कृपा धारे। हमारे अवगुण बहुत है गिनती मे नही आते। आप गुणवाते है। दयालु है। आप वाहो तो आप भा जाओ हम अपराधियो को गुरु संगत मे राख लो। आपने उपदेश दिआ हरि नाम दृढ़ किआ आप हमारे माता पिता सखा भाई बन्धु हो।

13

DATE

शबद 7
मारू महला 1

मूलखरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा
गुर की बचनी हाट बिकाना जित लाइआ तित लागा
तेरे लाले किआ चतुराई ?
साहिब का हुकम न करणा जाई।
मां लाली पिउ लाला मेरा, हउ लाले का जाइआ
लाली नाचै लाला गावै, भगति करउ तेरी राइआ
पीअहि त पाणी आणी मीरा
खाहि त पीसण जाउ।
पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहां तेरा नाउ
लूण हरामी नानक लाला बखसिहि तुधु वडिआई
आदि जुगादि दइआपति दाता।
तुधु विणु मुकति न पाई
रामजी राम राम
श्रीराम

DATE

शब्द
भावार्थ

मै अपने गुरु को मोल दे कर खरीदा गया हूं मेरा नाम सभागा है। गुरु के वचनो पर बिका हूं जिधर गुरु लगाते है लग जाता हूं।

आप के लाले को कोई चतुराई नही आती। आप का हुकम पालन नही कर सकता। मेरी मां लाली है बाप लाला है मै लाले का बेटा हूं। लाली नाचती है लाला गाता है आप की भगति करते है।

आप पानी पीओ तो लाता हूं आप खाओ तो मै पीहूं। आप के चरण मलुं, आप का नाम जपता रहूं। नानक जी फरमाते है मै लूण हरामी हूं आप की वडाई है अगर आप बख्श लेते है। आदि जुगादि से आप दयापति दाता हो। आप बिना मुकत नही हो सकते।

आप जी राम राम प्रणाम

DATE

शबद 8

रागु वडहंस महला १ घरु १

हंउ वारी वञा खंनिऐ वञा तउ साहिब के नावै।
अमली अमलु न अम्बड़ै मछी नीरु न होई॥
जो रते सहि आपणै तिन भावै सब कोई॥
साहिब सफलिओ रुखड़ा अम्रित जा का नाउ।
जिन पीआ ते तिरपत भये हउ तिन बलिहारै जाउ।
मैं कि नदरि न आवही वसहि हभीआं नाल।
तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतर पाल।
नानक तेरा बाणीआ तू साहिब मै रास।
मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदास।

राम जी राम राम

श्रीराम

8.1.2010

भावार्थ
शबद 8

मैं अपने साहिब पर बार बार बलिहार जाता हूँ। उन के नाम पर कुरबान जाता हूँ। अमल वाला अपने अमल को नहीं छोड़ सकता। जैसे मछली जल को नहीं त्याग सकती। जो अपने प्रभु के रंग में पूर्ण रूप से रंग गये हैं, वह सब को अच्छे लगते हैं। साहिब एक सफल वृक्ष की तरह है उन का नाम अमृत है। जिन्होंने अमृत पीया से तृप्त हो गये, उन पर बलिहार जाते हैं हम। वह मुझे नजर नहीं आता किन्तु वह तो हर समय मेरे साथ रहते हैं। उन की प्यास नहीं बुझ सकती क्योंकि उन के अन्दर बहुत प्यास है। नानक जी फरमाते हैं आप भी ही मेरी वराणी हो, मैं आप की राम हूँ। मन से धोखा तभी उतरेगा, जब प्रभु के आगे अरदास की जायेगी।

राम जी राम राम

17

DATE

शबद १ पन्ना ६५९

सतिगुरु की सेवा गाखड़ी सिर दीजै आपु गवाइ।
सबदि मरहि फिर न मरहि तां सेवा पवै सभ थाइ।।

पारस परसिए पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ।
जिसु पूरबि होवै लिखिआ, तिसु सतगुरु मिलै प्रभु आइ।
नानक गणतै सेवकु न मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ।

राम जी राम राम
श्री राम

classmate PAGE

DATE

शब्द 9

भावार्थ

सतगुरु की सेवा बड़ी मुश्किल है यह सिर अर्पण कर के अपना आप गवा कर की जा सकती है। सेवा सब जगह हो सकती है शब्द मरै फिर नही मरना होता। पारस को स्पर्श करने से पारस ही रहता है। लगन लगने से सच की प्राप्ति होती है। जिन के भाग्य मे पूर्व लिखा है उन्हे सतगुरु प्रभु मिलते हैं। नानक जी फरमाते हैं जिनने से सेवक नही मिलते, जिन्हे प्रभु बख्शीश करते हैं, उन की सेवा सफल होती है।

राम जी राम राम

श्री राम

DATE

शबद 10

महला 4

सभ जोति तेरी जगजीवना तूँ घट घट हर रंग रंगना।
सभि धिआवहि तुध मेरे प्रीतमा,
तूँ सति सति पुरख निरंजना।
इक दाता सभु जगत भिखारिआ,
हरि जाचै सभ मंग मंगना।
सेवक ठाकुर सभु तूँ है, गुरमति हर चंग चंगना
सभ कहहु मुखहु रिखीकेस हरे
जित पावहि सभ फल फलना।

राम जी राम राम

श्री राम

DATE

शब्द 10
गोविंद पन्ना 1313

हे प्रभो। सब में आप की ही ज्योति है।
आप जग को जीवन देने वाले हो, हर घर में
आप ही व्यापक हो। हे मेरे प्रीतम सब आप
का ध्यान करते हैं। आप सत हो पुरषोत्तम
हो, निरंजन हो। आप रुप वता हो तार सेवार
भिखारी है। सब आपसे ही मांगते हैं। आप ही
सेवक हो आप ही ठाकुर हो। गुरमत हो जाये
तो सब अच्छा है। सब मुख से उचारो रविदास
जिस से सब फल प्राप्त होंगे। हरे

राम जी राम राम
श्रीराम

DATE

शबद ॥

आसा सेख फरीदजीउ की बाणी

आप लीए लड़ लाई दर दरवेस से।
तिन धन जणेदी माउ आए सफल से ॥
दिलहु मुहब्बत जिन्ह सेई सचिआ।
जिन्ह मन होर मुख होर से कांढे कचिआ ॥
रते इस्क खुदाई रंग दीदार के,
विसरिआ जिन्ह नाम ते भुइ भार थीए।
परवदगार अपार अगम बेअंत तू।
जिना पछाता सच चुमा पैर मूं ॥
तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी
सेख फरीदै खैर दीजै बंदगी
राम जी राम राम
श्रीराम

शब्द ।। पन्ना 488
गोविंद

फरीद जी फरमाते हैं मुझ दरवेस को प्रभु ने आप ही लड़ लगा लिया। वह मां धन्य है जिन्हो ने ऐसा बेटा जाया है वही सफल है।

जिन के मन मे प्रभु के लिए प्यार है वही सच्चे है। जिन के मन मे होर है जुबान मे होर है वह कच्चे दर से निकाल दिये जायेगे। जो खुदा के दर्शन के लिए इश्क मे लीन है। जिन्हे नाम भूल गया है वह पृथ्वी पर भार स्वरूप है। हे प्रभो! आप ब परवरदिगार अपार हो। अगम हो बेअंत हो। जिन्होने सच पहचान लिया है उन्हे प्यार करु। ऐ खुदा मै तेरी शरण हूं, आप मुझे बख्श दो। खैर मे अपनी बन्दगी दो

राम जी राम राम

श्री राम

classmate

DATE

शबद 12

पन्ना 324

कबीर जी गउड़ी

रे जन मन माधउ सिउ लाईऐ,
चतुराई न चतुरभुज पाईऐ।
जिआ जप किआ तप किआ ब्रत पूजा,
जा के हृदय भाउ है दूजा।
परहर लोभ और लोकाचार,
परहर काम क्रोध अंहकार।
करम करत बधे अहंमेव,
मिलि पाथर की करहि सेव।
कहु कबीर भगत कर पाइआ,
भोले भाइ मिले रघुराइआ

राम जी राम राम

श्रीराम

DATE

शब्द 12

भावार्थ

कबीर जी फरमाते हैं, हे मेरे मन तूँ माधव जी से लग जा। चतुराई से चतुर-भुज नही मिल सकते। अगर मन मे द्वैत है तो सब जप, तप, पूजा व्रत व्यर्थ है। लोभ लोकचार छोड़ दो, काम क्रोध अहंकार त्याग दो। करम करते हुए अगर अहमता आ जाती है तो सब व्यर्थ है। पत्थर की सेवा करते है अन्दर अहंता करते हैं। कबीर जी कहते है, भगवान केवल भक्ति से मिलते हैं और भोले भाव से मिलते हैं

राम जी राम राम

श्रीराम

DATE

शबद 13

पन्ना 96

माझ महला 5 चउपदे घर 1

मेरा मन लोचै गुर दरसन ताई,

बिलप करे चात्रिक की नाई।

त्रिखा न उतरै सांति न आवै,

बिन दरसन संत प्यारे जीउ।

हउ घोली जीउ घोल घुमाई गुर दरसन संत प्यारे जीउ

तेरा मुख सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी चिर होआ देखे सारंगपाणी

धन सु देस जहां तूं वसिआ, मेरे सजण मीत मुरारे जीउ।

हउ घोली हउ घोल घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ,

इक घड़ी न मिलते ता कलिजुग होता, हुण कद मिलिए प्रिअ तुधु भगवंता

मोहि रैण न विहावै नीद न आवै, बिन देखे गुर दरबारे जीउ

हउ घोलि जीउ घोल घुमाई तिस सच्चे गुर दरबारे जीउ।

भाग होआ गुर संत मिलाइआ, प्रभ अबिनासी घर महि पाइआ

सेव करी पल चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुम्हारे जीउ।

हउ घोलि जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुम्हारे जीउ

DATE

शबद 13

भावार्थ

मेरे मन में गुरु दरशन की बहुत लालसा है यह चात्रिक की तरह विलाप कर रहा है। मेरे मन की प्यास नही बुझती शान्ति नही आती अपने सतगुरु के दरसन चाहता है। अपने सतगुरु के दरसन पर कुरबान जाता हूँ आप का सुन्दर मुख और सहज वाणी सुनते बहुत समय हो गया है। मै अपने सतगुरु पर बलिहार जाता हूँ। एक पल नही मिलते तो वह पल कलयुग जैसा हो जाता है। अब मै कैसे मिलुं मुझे नींद नही आती रात नही बीतती आप का दरबार देखने के लिए मन करता है। मैरे भाग्य खुल मुझे गुरु संत मिले प्रभु को मैंने अपने अन्दर ही पा लिया। आपकी सेवा करु एक पल भी आप को न भूलु मै दास अपने सतगुरु पर बलिहार जाता हूँ।

DATE

शबद 14

गउड़ी महला 5 पन्ना 240

आदि मधि जो अन्ता निबाहै, सो साजन मेरा मन चाहै

हरि की प्रीति सदा संग चालै,

दइआल पुरख पूरन प्रतिपालै।

बिनसत नाही छोड न जाई।

जह पेखा तह रहिआ समाई॥

सुन्दर सुघड़ चतुर जीअ दाता।

भाई पूत पिता प्रभु माता॥

जीवन प्राण आधार मेरी रास।

प्रीति लाई कर हृदय निवास॥

माइआ सिलक काटी गोपाल।

कर अपना लीन्हो नदर निहाल॥

सिमर सिमर काटे सब रोग।

चरण निधान सरब सुख भोग

पूरन पुरख नवतन नित बाला, हरि अंतर बाहर संग रखवाला

कहु नानक हरि हरि पद चीन, सरबसु नाम भगत को दीन

DATE

शबदार्थ
भावार्थ

जो साजन मेरे साथ आदि अंत मध्य मे रहता है वही मेरे मन को भाता है। हरि की प्रीति ही सदा संग चलती है। प्रभु दयाल प्रभु प्रतिपालन। करते हैं वह न विनसते है न छोड़ कर जाते हैं। जहां देखु वहीं पर है। वह सुन्दर सुघड़ चतुर जीवन के दाते हैं। भाई बेटा पिता प्रभु माता हैं। वह मेरे जीवन के प्राण आधार है। वह मेरे हृदय मे प्रेम से रहते हैं। उन्होने मेरी माया काट दी है। अपनी दृष्टि से मुझे निहाल कर दिया है। उन को सिमरन करने सब रोग दूर हो गये हैं। उन के चरण सब सुख जोग देने वाले हैं। वह पूर्ण पुरख है नव तन वाला है। वह अंदर बाहर सब जगह रहता है। नानक जी फरमाते है मन मे हरि का ध्यान करो वह अपने भक्त को स्वीकार देते हैं।

रामजी राम राम श्रीराम

DATE 11 1 2010

शबद 15

पन्ना 1254

राग मलार चउपदे महला 1 घर 1

प्राणी एको नाम धिआवहु ।
अपनी पति सेती घर जावहु ॥

खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा
खसम विसारि खुआरी कीन्ही, ध्रिग जीवन नही रहणा ॥

तधनो सेवहि तुझ किआ देवहि मागहि लेवहि रहहि नाही ।
तू दाता जीआ सभना का, जीआ अंदर जीऊ तुही ॥

गुरमुखि धिआवहि सि अमृत पावहि सेई सूचे होहि
अहनिसि नाम जपहु रे प्राणी, मैले हछे होहि ॥

जेही रुत काइआ सुख तेहा तेहो जेही देही
नानक रुत सुहावी साई, बिन नावै रुत केही ॥

राम जी राम राम

श्री राम

DATE

शब्द 15
भावार्थ

जब तक शरीर में प्राण है तब तक प्राणी है महाराज हमें सम्बोधन करते हैं, हे प्राणी तूं सदा एक ही नाम का ध्यान कर। फिर तूं पति से अपने घर जायेगा। खाना पीना हंसना सोना सब याद है केवल मरना भूल गया है। अगर हम अपने रामजी को भूल जाते हैं तो हमारा संसार मे रहना धिक्कार है। आप की क्या सेवा करें आपको क्या दे सकते हैं और मांगते वह है जो रहना नही है। आप सब जीवों के दाता हो। सब जीवों में जीवात्मा आप हो। गुरुमुख ध्यान करते हैं अमृत पाते हैं, वही वाकिफ हैं। रात दिन नाम जपो मैले से पवित्र हो जाओगे। जैसी ऋतु होगी वैसा ही शरीर को सुख होगा। महाराज फरमाते हैं वही ऋतु अच्छी है जिस मे हम नाम जपते हैं शेष सब व्यर्थ हैं।

राम जी राम राम
श्री राम

DATE

शबद 16

रामकली महला 5

मंगला हरि मंगला मेरे प्रभ के सुणीऐ मंगला।
सोहिलड़ा प्रभ सोहिलड़ा। अनहद धुनीऐ सोहिलड़ा॥

अनहद बाजे शबद अगाजे नित नित जिसहि वधाई
सो प्रभ धिआईऐ सभु किछु पाईऐ मरै न आवहि जाई

चूकी पिआसा। पूरी आसा, गुरमुखि मिलु निरगुनीऐ
कहो नानक घर प्रभ मेरै कि नित नित
मंगल सुनीऐ॥

राम जी राम राम

श्रीराम
11.1.2010

classmate

DATE

शब्द 16

भावार्थ

प्रभु का नाम सुनने मात्र से मंगल ही मंगल होता है। अन्दर अनहद ध्वनि सुनने से मंगल गीत गाये जाते हैं। जिस के अन्दर अनहद शब्द बजता है उसे नित २ बधाई है। उस प्रभु का धिआन करो। सब कुछ प्राप्त होगा आना जाना भी समाप्त हो जायेगा। सारी विआधि खत्म हो जायेगी सब आशायें पूर्ण हो जायेगी। गुरु भाव अपने आप को सदा निरगुण मानता है। महाराज फरमाते हैं मेरे घर मे तो नित मंगल की आवाज़े आती हैं। हमारी पर भी प्रभु कृपा करें।

राम जी राम राम

श्रीराम

DATE

शबद 7

सारग महला 5

1226

माई री पेखि रही बिसमाद

अनहद धुनि मेरा मन मोहिओ।

अचरज तां के स्वाद॥

मात पिता बन्धुप है सोई।

मन हरि को अहिलाद॥

साध संग गाये गुन गोबिन्द।

बिनासिओ सब परमाद॥

डोरी लपट रहहि चरनह संग।

भ्रम भय खोले स्वाद॥

एक आधार नानक जन कीआ।

बहुरि न जोनि भ्रमाद॥

राम जी राम राम

श्रीराम

शबद 17

भावार्थ

बुद्धि विसमाद का अनुभव कर रही है। अनहद धुनि ने मन को मोहित कर दिया है। उस का स्वाद भी अजीब सा है। माता पिता बन्धु सब वही प्रभु है। हे मेरे मन तूँ हरि को मिल कर प्रसन्न हो। सन्तो के संग गोविन्द गुन गाने से सब परमाद समाप्त हो गया। मन की डोरी उन के चरणों संग लिपट गई, सब भ्रम भय समाप्त हो गये। नानक जी फरमा रहे हैं कि मैंने एक आधार प्रभु का ले लिया, फिर योनियों मे नही भटकना।

राम जी राम राम

श्रीराम

शबद 18

सोरठि महला 3 603

दाते दात रखी हथि अपणै, जिसु भावै तिसु देइ
नानक नाम रते सुख पाइआ, दरगह जापहि सेइ ॥

बिन सतगुरु सेवे हउमै रोग न जाई।
जग चारे भरमाई ॥

हम दीन तुम जुग जुग दाते, सबदे देहु बुझाइ
हरि जीओ क्रिपा करो तुम पिआरे।
सतगुरु दाता मेल मिलावहु हरि नाम देवहु आधार
मनसा मार दुबिधा सहज समाणी।
पाइआ नाम आधारा ॥
हरि रस चाख मन निरमल होआ।
किलिविख काटण हारा ॥
सबद मरहो फिर जीवहो सद ही तां फिर मरण न
अमृत नाम सदा मन मीठा सबदे पावै कोई ॥

DATE

शबद 18

भावार्थ

प्रभु ने भक्ति की दात अपने पास रखी है वह जिस को चाहे दे दें। महाराज कहते है नाम मे रत रहने से सुख प्राप्त होता है और दरगाह मे भी उन का मान होता है। बिना सतगुरु की सेवा के बहुत दुख होता है। चारो युगो में भ्रम भ्रम कर देखा है। हम दीन हैं और आप युग युग के दाता है। शबद हम को भुगा दो। हे हरि! जी आप कृपा करे। सतगुरु मिला दो वह मुझे हरि के नाम का आधार दें। सारी कामनाओ को समाप्त कर के सहज अवस्था प्राप्त हुई नाम आधार। मिला। हरि रस पा कर मन निरमल हुआ यह नाम सब पापों को काटने वाला है। शबद मे मर जाओ फिर मरना नही होगा। अमृत नाम सदा मीठा है शबद से कोई ही प्राप्त कर सकता है।

शबद 19

मारूवार महला 5 1094

जे तूँ मितर असाडड़ा, हिक भोरी न विछोड़
जीउ महिंजा तउ मोहिआ, कद वसी जानी तोड़

तूँ वड सजण मैडिआ, देई सिर उतार।
नैण महिंजे तरसदे, कद वसी दिदार।।

नीहु महिंजा तउ नाल, बिआ नेह कूड़ाव डेख
कपड़ भोग डरावणे, जिचर पिरि न डेख।।

उठी गालू कंत डे, हउ पसी तउ दिदार।
काजल हार तमोल रस, बिन पसे हभी
रस छार।।

राम जी राम राम

श्री राम

classmate

DATE

शब्द 19
भावार्थ

अगर आप हमारे मित्र हो तो। हमे आप एक
पल भी न विछोड़ा दो।। मेरा जी आप पर
मोहित हो गया है। कब मै आपके दर्शन करूं

आप मेरे साजन हो। मै सीस उतार दूं आपके
लिए, मेरे नयन दर्शनों के लिए तरस रहे हैं।

मेरा प्रेम केवल आपसे है। शेष सब झूठ प्यार
है। जब तक मुझे आपके दर्शन नही होते
यह श्रृंगारी भोग सारे डरवाले लगते हैं।
सवेरे 2 36 करः, कब आप का दिदार करूं
काजल हार पान आदि सब रस फीके है।

राम जी राम राम
श्री राम

DATE

शबद 20

सिरीराग महला 5 41

इउ गुरु सालाही न रज्जाउ, मै मेले हरि प्रभ पास।
होइ निमाणी ढहि पवां पूरे सतिगुर पास॥

निमाणिआ गुरु माणु है, गुरु सतगुरु करे साबास।
हउ पंथ दिसाइ नित खड़ी, कोई प्रभ दसे तिन जाउ।
जिनि मेरा पिआरा राविआ, तिन पीछै लागि जाउ॥ रहाउ॥
करि मिन्नत कर जोदड़ी मैं प्रभु मिलणै का चाउ॥
मेरे भाई जना कोई मो कउ हरि प्रभ मेलि मिलाइ॥
हउ सतिगुर विटहु वारिआ, जिनि हरि प्रभु दिआ दिखाइ॥
सतगुर नू सभ को लोचदा जेता जगत सभ कोइ॥
बिन भागा दरसनु न थीए, भागहीण बहि रोइ॥
जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ, धुर लिखिआ न मेटै कोइ
आपे सतिगुर आप हरि आपे मेल मिलाइ॥
आपे दइआ कर मेलसी, गुर सतिगुर पीछै पाइ॥
सभु जगजीवन जगि आप है, नानक जलु जलहि समाइ

DATE

शबद 20

भावार्थ

मैं अपने गुरु की सराहना करते 2 नहीं थकती, जिन्होने मुझे प्रभु से मिला दिया। निमाणी हो कर अपने गुरु जी के चरणों में गिरी रहूँ। निमाणिओं को गुरु माण देते हैं, शाबाश देते हैं। मै अपने प्रभु का रास्ता जानना चाहती हूँ, जो मुझे दिखाये मै उन के पास जाऊं। जिन्होने मुझे प्रभु से मिलाया मै उन के पीछे लगी रहूँ। मुझे प्रभु के मिलने का बड़ा चाव है, मै सतगुरु जी के आगे प्रार्थना विनती करती हूं, अपने सतगुरु पर बलिहार जाती हूं जिन्होंने मुझे प्रभु दिखा दिया। सारा संसार प्रभु को चाहता है। बिना भाग्य के दर्शन नही होते, भाग्यहीन रोते रहते हैं। जो प्रभु का हुक्म होता है वही होता है। धुर से जो लिखा है वह नही मिटता। आप ही सतगुरु अपने मे मिला लेते हैं। सतगुरु जी के पीछे पड़े रहो वह आप अपने मे मिला लेगें, सब के जगजीवन आप है जल में जल आ ... जैसे मिल जाता

11

शब्द 21

सतगुरु की सेवा सफल है
जे को करे चित्त लाये
मन चिंदिआ फल पावणा हउमै विचहु जाइ।
बंधन तोड़े मुक्ति होइ, सचे रहे समाई॥
इस जग में नाम अमोल है, गुरमुख वसै मन आइ॥
नानक जो गुरु सेवे आपणा।
हउ तिन बलिहारे जाऊं।

राम जी राम राम
श्री राम
26. 1. 2010

DATE

शबद 21

भावार्थ

सतगुरु के सेवा सदा सफल है अगर मन चित लगा कर करता है। अगर अहंमता खो कर सेवा करता है तो उस शिष्य मन-वांछित फल प्राप्त होता है। उस के सतगुरु माया के सब बंधन तोड़ देते हैं उसे मुक्त कर देते हैं, वह सच में समाया रहता है। इस संसार में नाम बहुत मुश्किल से मिलता है, यह केवल गुरुओं के मन मे बसता है। महाराज फरमाते हैं जो अपने गुरु की सेवा करते हैं, उन पर मै बलिहार जाता हूं।

DATE

शबद 22

सभ जोति तेरी जगजीवना ।
तूँ घटि घटि हरि रंग रंगना ॥
सभ धिआवहिं तुध मेरे प्रीतमा ।
तूँ सति सति पुरख निरंजनां ॥
इक दाता सभ जगत भिखारिआ ।
हरि जाचहि सभ मंग मंगनां ॥
सेवक ठाकुर सभ तूं हैं तूँ हैं ।
गुरमति हरि चंग चंगनां ॥
सभि कहहु मुखहु रिखीकेस हरे ।
रिखीकेस हरे, जितु पावहि सभ फल फलना ॥

राम जी राम राम
श्री राम

DATE

सारांश

शब्द 22

हे जग को जीवन देने वाले, सब मे आपकी ही ज्योति है। आप हर घर मे अपना रंग दिखाते हो। सब आप का ही ध्यान करते हैं आप हमारे प्रीतम हो। आप निरंजन पुरख हो, और आप सत्य हो। सारा संसार भिखारी है एक आप दाता हो। सब आपसे ही मांगते हैं आप ही सेवक हो। आप ही ठाकुर हो। सब आप ही हो। गुरमति आ जाये तो सब अच्छा है। सब मुख से कहो साहिबकेस हरे, साहिबकेस हरे। जिससे सब फल प्राप्त होते हैं।

राम जी राम राम

साहिब

DATE

शबद 23

महला 1 घर 2

हउ बारी वञा, खनिए वञा, तउ साहिब के नावै।
असली अमल न अम्बड़ै, मछी नीर न होइ।
जो रत्ते शहो आपणै, तिन भावै सब कोई॥
साहिब सफलिओ रुखड़ा, अमृत जा का नाउ।
जिन पीआ ते तृप्त भए, हउ तिन बलिहारै जाउ॥
मै की नदरि न आवही, वसहि हभिआं नाल।
तिखा तिहाइआ किउ लहै, जा सर भीतर पाल॥
नानक तेरा बाणीआ, तू साहिब मै रास।
मन ते धोखा तां लहै, जा सिफति करी अरदास।

राम जी राम राम

श्रीराम

DATE

शब्द 23

भावार्थ।

मैं अपने सतगुरु के नाम पर बार २ बलिहार जाती हूँ. असली अमल नहीं छोड़ सकता। जैसे मछली पानी नहीं छोड़ सकती। जो अपने शहो, प्रभु को प्राप्त कर चुके हैं, वह सब को अच्छे लगते हैं। मेरे सतगुरु मेरे साहिब सफल वृक्ष है जिस का नाम अमृत है। जिन्होंने यह अमृत पीआ वह संतुष्ट हुए उन पर मैं बलिहार जाता हूं। मुझे वह नजर नहीं आते, मेरे साथ बसते हैं। अगर अन्दर प्रेम के तीर लगे हैं, उन की प्यास नहीं बुझ सकती। नानक जी फरमाते हैं, मैं अपने प्रभु का व्यापारी हूँ आप मेरे साहिब हो, मैं आपकी राध हूं। मन का धोखा तभी उतरेगा जब प्रभु के आगे अरदास करेंगे।

DATE

शबद 24

सतिगुरु की सेवा गाखड़ी
सिर दीजै आप गवाइ।
सबदि मरै फिर न मरै. ता सेवा पवाहि
सब थाइ।
पारस परसिए पारस होवै. सचि रहै लिव लाइ।
जिस पूरब होवै लिखिआ
तिस सतगुरु मिलै प्रभु आइ
नानक गणतै सेवक ना मिलै
जिस बखशे सो पवै थाइ।

राम जी राम राम
श्री राम

DATE

शबद 24

भावार्थ

सतगुरु की सेवा करनी बड़ी मुश्किल है यह अपनापन खो कर और पीर अपर्ण कर के होती है। शबद में रत हो जाये तो आवागमन खत्म हो जाता है। तब हमारी सेवा कबूल होती है और हर कर्तव्य कर्म सेवा लगने लगता है। पारस को छूकर पारस हो जाता है जब पूर्णतया सच से लगन लग जाती है। जिन के पूर्व कर्म होते है उन्हें सतगुरु प्रभु मिलते हैं। महाराज फरमाते है कोई ऐसा सेवक गिनती मे नही है। जिस को प्रभु चाहे उस की सेवा कबूल होती है।

राम जी राम राम

श्री राम

28. 1. 2010

शबद 25

भैरउ महला 5

ऐसो हीरा निरमल नाम ।
जासु जपत पूरण सब काम ॥
नमस्कार तां को लख बार ।
इहु मन दीजै तां को वार ॥
सिमरत तां के मिटे संताप ।
होइ आनन्द न व्यापहि ताप ॥
जां की दृष्टि दुख डेरा ढहै ।
अमृत नाम शीतल मन गहै ॥
अनिक भगत जां के चरण पुजारी ।
सगल मनोरथ पूरन हारी ॥
खिन मे ऊणे सुभर भरिआ ।
खिन मे सूके कीन्हे हरिआ ॥
खिन मे निथावें को दीनो थान, खिन मे निमाणे को दीना मान ।
सब मे एक रहिआ भरपूरा, सो जापै जिस सतगुरु पूरा ॥
हरि कीरतन तां को आधार, कहो नानक जिस किरपा दइआ

DATE

शब्द 25

भावार्थ

नाम ऐसा अमूल्य हीरा है। जिसका जाप करने से सब कार्य पूरा हो जाते हैं। इस नाम को लाख बार नमस्कार है, इस पर अपना मन वार दें। इसका सिमरन करने से सब संताप मिट जाते हैं। आनन्द आ जाता है कोई ताप नहीं व्यापता। जिसकी कृपा दृष्टि से सब दुःख दूर हो जाते हैं, अमृत नाम से मन शीतल होता है। अनेक भक्त प्रभु के पुजारी हैं सब मनोरथ पूर्ण करने वाला नाम है एक दृष्टि से खाली बर्तन भर देते हैं चित्र में सूखे को हरा कर देते हैं। एक दृष्टि में निथावे को स्थान देते हैं एक दृष्टि में निआसरों को आसरा देते हैं। सब में प्रभु एक भरपूर हैं। वही जाप करता है जिसे पूर्ण सतगुरु मिले हों जिस पर प्रभु आप दइआल होते हैं उन्हें कीर्तन का आधार मिलता है।

राम जी राम राम
श्रीराम
28.1.2010

classmate

PAGE

DATE

शबद 26 Page 1293

मिलत पिआरो प्राननाथ, कवन भगति ते ।
साधसंगति पाई परम गते ॥
मैले कपड़े कहां लउ धोवउ ।
आवैगी नींद कहां लग सोवउ ॥
जोई जोई जोरिओ सोई सोई फारिओ ।
झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥
कहु रविदास भइओ जब लेखो ।
जोई जोई कीन्हो सोई सोई देखिओ ॥

राम जी राम राम
श्रीराम

DATE

शबद २६

मेरे प्राणनाथ पिआरे कैसी भाँति से मिले ?
साध संगत से परम गति प्राप्त होती है।
मैले कपड़े कब तक धोऊँ, नींद आये तो कहाँ
सोऊँ ? जो जो जोड़ा वह फटता गया, झूठे व्यापार
कर के दुकान खत्म हो गई, संसार से चल बसा।
रविदास जी फरमा रहे हैं जब लेखा लिया जाएगा
जो जो कीआ है सोई सोई दिखेगा। इस लिए
कृपा मांगती हूँ कि हम अच्छे कर्म करें।

राम जी राम राम
श्री राम

DATE

389

शब्द 27

अनदिन जपऊ नाम गुण तासि ।
नानक की प्रभ यहि अरदास ॥
तूँ मेरा तरंग हम मीन तुम्हारे ।
तूँ मेरा ठाकुर हम तेरे द्वारे ॥
तूँ मेरा करता हऊँ सेवक तेरा ।
सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥
तूँ मेरा जीवन तूँ आधार ।
तुमहि पेखि बिगसै कऊलार ॥
तूँ मेरी गति पति तूँ परवान ।
तूँ समरथ मै तेरा तारा

राम जी राम राम
श्रीराम

DATE

शब्द 27
आर्दाप

आप गुणों से भरपूर हो। आप कृपा करो। दिन रात मैं आप का नाम जपु। नानक जी प्रभु के आगे अरदास करते हैं। महाराज जी फरमाते हैं हे प्रभु आप मेरा तरंग हो और हम आप की मछलियां हैं। आप मेरे ठाकुर हो हम सब आप के द्वार पर हैं। आप मेरा कर्ता हो हम आप के सेवक हैं, आप गुणों से भरपूर हो। आप मेरे जीवन आधार हो। आप का दर्शन करने से मेरा मन रूपी कमल खिल जाता है। आप ही मेरी गति व मति हो आप समरथ हो मुझे आप का ही बल है।

राम जी राम राम
श्रीराम

DATE

शबद 28

पैरी पै पै बहुत मनाई, दीनदयाल गोपाला जीउ।

दुख तदे जां विसर जावै।

भुख विआपै बहु विधि धावै॥

सिमरत नाम सदा सुहेला, जिस देवै दीनदयाला जीउ

सतगुरु मेरा वड समरथा, जीइ समाली ता सब दुख लथा॥

चिंता रोग गई हउ पीड़।

आप करे प्रतिपाला जीउ

बारिक वांगी हउ सब किछ मंगां।

देदे तोटि नही प्रभ रंगा॥

हउ बलिहारी सतगुरु पूरे।

जिन बंधन काटे सगले मेरे॥

हृदय नाम दे, निरमल कीए।

नानक रंग रसाला जीओ॥

राम जी राम राम

श्री राम

classmate

PAGE

55

शब्द 28

भावार्थ

मै अपने दीनदयाल गोपालजी के चरणों मे पड़ कर उन्हे बहुत मनाती हूं। वह बिसर जाते हैं तो बहुत दुखि होता है, भूख लगती है तो इधर उधर भागती हूँ। नाम सिमरन करने से सदा सुख है जिस दीनदयाल प्रभु आप दो मेरे सतगुरु पूर्ण समरथ हैं. जीव उन्हे याद करता है तो सब दुख दूर हो जाते हैं। चिंता की पीड़ा सब मिट जाती है, आप प्रभु प्रतिपालना करते हैं। बच्चे की तरह सब कुछ आपसे ही मागता हूं। प्रभु के रंगो मे कोई कमी नही आती वह देते ही जाते हैं। अपने सतगुरु पर बलिहार जाती हूं जिन्होंने सारे बंधन काट दिये। हृदय मे निरमल नाम दे कर पवित्र कर दिया। नानक जी फरमा रहे है। अम्रत का नाम रस देने वाला हैं।

राम जीराम राम
श्रीराम

शबद 29

तउ कारणि साहिबा रंग रते

तेरे नाम अनेका रूप अनंता

कहणा न जाई तेरे गुण केते

देवतिआं दरसन कै ताई दूख भूख तीरथ किए

जोगी जती जुगति महि रहते कर कर भगवे भेख भए

दर घर महला हस्ती घोड़े छोड़ि विलाइत देस गए

पीर पैगम्बर सालिक सादिक छोड़ी दुनिया थाइ पए

साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोड़ चमड़ीलिए ।। विलऔत देस गए

दुखिए दरदवंत दरि तेरै नाम रते दरवेस भए ।।

खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूत धोती कीनी

तूं साहिब हउ सांगी तेरा, प्रणवै नानक जाति कैसी ।।

राम जी राम राम

श्री राम

3.2.10

classmate

57

DATE

शब्द 29

भावार्थ

हे मेरे साहिब, हम आप के लिए आपके ज्योति रंग में रंगे गए। आपके अनंत रंग है, अनन्त रूप हैं, आप के गुण वर्णन नहीं कर सकते। देवताओं ने आपके दर्शन के लिए ज्ञान ध्यान तप तीर्थ किए। जोगी जती सारे प्रकृति में रहते हैं भगवे भेष धारण करते हैं। सवारी घर दर महल घोड़े हाथी छोड़कर चले गये। पीर पैगम्बर सालिक सादिक सारे दुनिया छोड़ गए। सारे स्वाद स्वाद कपड़े छोड़ कर चमड़ी धारण की। दुनिए दरवेश आपके नाम में रंग गए और फकीर बन गए। खलड़ी खपरील चूड़ी चमड़ी शिखा चोटी जनेऊ धोती पहनी। महाराज कह रहे हैं आप मेरे साहिब हो। मैं आपका लालाधारी हूं फिर जात पात कैसी।।

राम जीराम राम

श्रीराम

classmate

PAGE

शबद 30

सखी सहेली मेरै ग्रहस्थ आनन्द।
कर किरपा भेटे मोहे कंत ॥
मोहि दुहागनि आप सिंगारी।
रूप रंग दे नाम सवारी ॥
मिटिओ दुख अरु सगल संताप।
गुरु होए मेरे माई बाप॥
तपति बुझी पूरी सब आसा।
मिटे अन्धेर भए परगासा ॥
अनहद शबद अचरज बिसमाद।
गुरु पूरा, पूरा परसाद ॥
जा कउ प्रगट भए गोपाल।
ता के दरसन सदा निहाल ॥
सरब गुणा ता कै बहुत निधान।
जां को सतिगुरु दीजो नाम ॥

राम जी राम राम

classmate

DATE

शब्द 30

आर्नीय

हे सोहिया [illegible] सहेलिओ मेरे गृहस्थ मे आनंद है।
किरपा कर के [illegible]आत्मा के पति परमात्मा मिल गए
है। उसे उदासीन ने [illegible] अपने शृंगार है। अपना रंग
चढ़ा कर संवार दिया है। सारे [illegible] संताप खत्म हो
गये है सतगुरु मे माई बाप हो गये है। [illegible] जल बुझ
गई है सारी आशांए पूर्ण हो गई हैं। अन्तर [illegible]
हो गया है। आश्चर्य विसमाद अनहद शब्द बज रहे हैं।
महत्वपूर्ण गुरु की किरपा से हो रहा है। जिन के
अन्दर गोपाल प्रगट हो गए, उन के दर्शन से भी प्रभुता
मिलती है। उन के बहुत गुण हैं बेअन्त हैं, जिन को
सतगुरु ने मान दिया है।

रामजीरामराम

श्रीराम

DATE

शबद 31

हरि की वडिआई देखहु संतहु।
हरि निमाणिआ माणु देवाए॥
तेरे कवन गुण कहि कहि गावा।
तूँ साहिब गुणी निधाना॥
तुमरी महिमा बरनू न साकउ।
तूँ ठाकुर ऊच भगवाना॥
मै हरि हरि नाम धर सोई।
जिउ भावै तूँ राख मेर साहिबा॥
मै तुम बिन अवर न कोई।
मै ताण दिबाण तूँ है मेरे स्वामी॥
मै तुध आगै अरदासि
मैं होर थाउ नाही जिस पै करउ बेनती
मेरे सुख दुख तुध ही पासि॥
विचे धरती विचे पाणी विच कासट अगनि धरीजै।
बकरी सिंह इकतै थाई राखे मन हरि जप भ्रम भउ दूरि
जिउ धरती चरण तले ते ऊपर आवै। तिउ नानक साध जना
जगत आण सभ पैरी पाए॥

61

शबद 31

भावार्थ

यह सब हरि की वडिआई है जो निमाणो को भी माण देते हैं। आप गुणों के खजाने है आप के क्या २ गुण कहूँ। आप अबेअन्त भगवान हैं आप की महिमा नहीं कह सकते। मेरा के हृदि हरिनाम का सहारा है मेरा आप के सिवा और कोई नहीं जैसे आप रखें ठीक है। आप ही मेरा बल है। आप ही मेरे स्वामी है, मेरी केवल आप के आगे अरदास है। और कोई जगह नहीं जिस के आगे मै बेनती करू मेरा सुख दुख सब आप को ही है बीच मे ही धरती है बीच मे ही पानी है बीच मे ही अग्नि है। बकरी और सिंह को एक स्थान पर रखते हो। मैं मन हरि नाम जप कर सब भ्रम भय दूर कर दे। जैसे धरा रावैन से धरती ऊपर आती है वैसे ही नाम जन (संतो) के चरणों मे लगना है।

DATE

शबद 32

मा।
आपे हेत न पूजनी सतगुरु हेत सुचेत सहाइ।
साइ विसाइ न पूजनी सतगुरु साइअथाह समाइ॥
साहिब तूल न साहिबी सतगुरु साहिब सच्चासाइ॥
दाते दात न पूजनी सतगुरु दाता सच ड्रिड़ाइ।
वैद न पूजन वैदगी, सतगुरु हउमै रोग मिटाइ॥
देवी देव न सेव तुल, सतगुरु सेव सदा सुखदाइ
साइर रतन न पूजनी, साध संगत गुर शबद सुमाइ
अकथ कथा वडी वडिआइ॥

राम जी राम राम

श्रीराम

DATE

शब्द 32

भावार्थ।

मां बाप की पूजा करने से पूर्ण सुचेत नही होते सतगुरु सदा सहाइ की सेवा करनी है। शाह बादशाह की पूजा से भी पूर्णता नहीं सतगुरु शाह अथाह मे समा जाता है। साहब के समान कोई भी साहिबी नहीं है सतगुरु सच्चा साई है। दाता को पूजने से भी पूर्णता नहीं है साहिब सच्चा साई है। वैदो की पूजा से भी पूर्णता नही है सतगुरुवैद्य अहमंता का रोग मिटाते हैं। साइर रत्नो की पूजा भी पूर्ण नहीं है। सतगुरु का शब्द जब सहज रूप से चलता है। यह अकथ कथा प्रभु की बड़ाइ है।

राम जी राम राम

श्रीराम

DATE

शबद 33

मै दसहु मारग संतहु किउ प्रभु मिलाइआ।
मन लोचै हरि मिलण। कोऊ किउ दरसन पाइआ॥
मैं लाख विड़ते साहिबा जे बिंद बुलाइआ॥
मै चारे कुंडा भालिआ तुधु जेवड न साइआ॥
मन अरपऊ हऊमै तजऊ इत पंथ जुलाइआ।
नित सेवहु साहिब आपणा। सतसंगति मिलाइआ॥
सभै आसा पूरिआं गुरु महलि बुलाइआ।
तुधु जेवड होरु न सूझई, मैर मिज गुमाइआ॥

राम जी राम राम

श्रीराम

3. 2. 10

DATE

शब्द 33

भावार्थ

हे संतो वह रास्ता बताओ प्रभु को कैसे मिलूं। मेरा मन बहुत चाहता है कैसे दरशन मिले। एक निमिष भी आपने बुला लिया तो लाखों की कीमत बढ़ गई। चारों ओर देखा आप जैसा साँई नहीं है। मन अविद्या कर इनको छोड़ दूं ऐसे मार्ग पर चलूं। अपने साहिब की सदा सेवा करूं सतसंग में मिल कर। जब गुरु ने अपने महल बुलाइआ सारी इच्छाएं पूर्ण हो गई। हे मिठ गोसाईं जी आप जैसा कोई भी दूसरा नहीं सूझता।

राम जी राम राम

श्रीराम

classmate

DATE

सबद 34

भइआ दिवाना साह का नानक बउराना।

हउ हरि बिन अवर न जाना ॥

कोई आखै भूतना कोई बेताला।

कोई आखै आदमी नानक बेचारा।

तउ देवाना जाणीऐ जां भै देवाना होइ।

एकी साहब बाहरा दूजा अवर न जाणै कोइ ॥

तउ देवाना जाणीऐ, जां साहिब धरे पिआरु।

मंदा जाणै आप को अवर भला संसारु ॥

राम जी राम राम

श्री राम

3.2-10

DATE

शब्द ३५

भावार्थ

नानक जी को सब कहते थे यह नानक पागल है अपने शाह का प्रभु का। यह कहते हैं मैं हरि के बिना कुछ भी नहीं जानता। कोई उन्हे भूतना कोई बेताला कहता कोई उन्हे बेचारा आदमी कहता। महाराज फरमाते हैं वह ही दिवाना है जो प्रभु के भय मे दिवाना हुआ है। वह बस एक अपने साहब की सेवा करता है किसी दूसरे की नही। वही असली दिवाना है जिसे प्रभु आप पिआर करते है जो अपने आप को बुरा समझता है और सारे संसार को भला मानता है।

राम जी राम राम
श्री राम

शबद 35 1209 Page

मोहन घर आवहु करहु जोदरिआ

मान करउ अभिमानै बोलउ भूल चूक तेरी प्रिय चिरिआ।

निकट सुनउ अरु पेखउ नाही, भरमि भरमि दुख भरिआ।

होइ क्रिपाल गुर लोह पारदो

मिलउ लाल मन हरिआ॥

एक निमख जे बिसरै सुआमी।

जानउ कोट दिनस लख बरिआ॥

साध संगत की भीर जउ पाई।

तउ नानक हर संग मिरिआ॥

राम जी राम राम

श्री राम

3. 2. 10

DATE

शब्द 35

मार्वीय

हे मेरे मोहन मेरे मन मे आओ मै लाख मिन्नते करती हूँ। मेरा आप पर गर्व है भूल चूक बोलती हू मै आपकी छोटी सी चिड़िया हूं। आपको निरन्तर सुनती हूं परन्तु देखती नहीं हूं। नाम जपन कर डली हो गई हूं। प्रभु ने किरपा करी सारे परदे उतार दिए मन को हरने वाला लाल मिल गया। एक निमिष भी अगर बिसर जाता है तो लगता है कोटि कोटि वर्ष बीत गये हैं। साधसंगत जब प्राप्त हो गई तो प्रभु मिल गए।

राम जी सदा सहाय

श्रीराम

classmate

DATE

शबद 36 622 page

हरि की प्रेम भगति मन लीना।

नित बाजहि अनहत बीना॥

सुख सहज आनंदा, प्रभ मिलिओ मन भावदा॥

पूरै गुरु किरपा धारी, ता गति भई हमारी॥

हरि चरणा की ओट सताणी, मन चूकी काणि लोकाणी॥

जगजीवन दाता पाइआ, हरि रसकि रसकि गुण गाइआ॥

प्रभ काटिआ जम का फासा।

मन पूरन होई आसा॥

जह पेखा तह सोई।

हरि प्रभ बिन अवर न कोई॥

कर किरपा प्रभ राखे, मन जनम जनम दुख लाथे॥

निरभउ नाम धिआइआ, अटल सुख नानक पाइआ॥

रामजी राम राम

श्रीराम

71

DATE

भावार्थ

शब्द 36

यह मन प्रभु की प्रेम भगति मे लीन हो गया है। नित अन्तर मे अनहद शब्द सुनाई देता है। मन को मा जाने वाले प्रभु मिल गये हैं सुख सहज आनंद की अवस्था हो गई है। पूर्ण गुरु जी ने किरपा कर दी तो हमारी गति पूर्ण हो गई है। हरि के चरणों की ओट मिल गई, तो सारी लोक लाज खत्म हो गई। जगत का जीवन दाता मिल गया तो रस ले ले कर गुण गाए। प्रभु ने जन की पालना कर दी है, जहां देखु वहीं आप हैं। उन के बिना दूसरा कोई नहीं है। प्रभु ने कृपा कर के अपने चरणों मे राख लिए हैं जनमो जन्मो के दुख उतर गये हैं। निर्भय नाम का ध्यान किया तो अटल सुख की प्राप्ति हो गई

गुरु नानक जी।

राम जी राम राम

श्री राम

classmate

PAGE

DATE

शबद 37

सतगुरू की सरणाई भजि पउ मेरे मना।
गुरु सतगुरु पाईऐ छुटिए ॥
मेरे मन जपि हरि हरि हरि मन जापिए।
मेरे मन सो प्रभु सदा मेरे नाल है।
सुआमी को किथै हरि पै नासिए ॥
हरि प्रभु बख्शे लए प्रभु साचा।
हरि आप छडाए छुटिए ॥
मेरे मन सेवहु सो प्रभ सब सुखदाता।
जित सेविए निज घर वसीए ॥
गुरुमुखि जाइ लहहु घर अपना।
घसि चंदन हरि जस घसिए ॥
मेरे मन हरि हरि हरि हरि हरि जस।
उतम लै लाहा हरि मनि हसिए ॥
हरि हरि आप दइआ कर देवै, तां अमृत हरि रस चा
मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे, ते साकत नर जम छु
ते साकत चोर जिना नाम विसारिआ, मन तिन कै निकट न
जन नानक हरि प्रभ मेर करि, तिन माया नाल न चालिए

भावार्थ

शबद 37

हे मन तू सतगुरु की ओर दौड़, उन के पीछे जा वह बन्धन छुड़ा देंगे। हे मन तू हरि नाम का जाप कर, वह प्रभु सदा तुम्हारे साथ है। सवामी को कहां ढूंढे। वह साचा प्रभु आप बख्श ले। वह आप छुड़ायेंगे तो छूटेंगा। हे मन सदा सुखदाता प्रभु की सेवा कर, उन के सेवा से तू अपने मनरूपी घर मे बसेगा। गुरमुख अपना घर प्राप्त कर लेता है। हर नाम का चंदन घिसता है। हे मेरे मन, यह उत्तम लाभ हरिनाम जाप है, उत्तम लाहा से प्रसन्नता मिलेगी। आप ही हरि यह अमृत दें तो हम पीवें। मेरे मन। जिन्होंने नाम बिसार दिया है वह साकत चोर हैं उन के निकट नहीं जाना। जिनको प्रभु ने पूरा कर दिया है वह एक मासा भी तुल नही सकते।

रामजीराम राम

श्रीराम

5.2.10

DATE

शबद 38 पेज 360

बाबा मन मतवारो। नाम रस पीवै।

सहज रंग रच रहिआ।

अहनिस बनी प्रेम लिव लागी।

शबद अनाहद गहिआ॥

गुड़ कर गिआन धिआन कर धावै पाइऐ।

कर करणी कस पाइऐ॥

भाठी भवन प्रेम का पोचा।

इत रस अमिउ चुआइऐ॥

पूरा साच पिआला सहजे तिसहि पिआए

जा को नदर करे।

अमृत का वापारी होवै. किआ मद छूछै भाउ ध

गुरु की साखी अमृत बाणी, पीवत ही परवाणु भइआ

दर दरसन का प्रीतम होवै. मुकति बैकुंठै करै कि

सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनम न हारै

कहै नानक सुण भरथरि जोगी खीवा अमृत धारै।

DATE

शबद 38

भावार्थ।

यह मन मत्त नाम रस पीता है। यह प्रभु के रंग में सहज अवस्था में आ गया है। रात दिन प्रेम की लगन लग गई है। अनहद शब्द को मन ने पकड़ लिया है। गिआन खिडाग मीठा लगने लगा है तत्व को प्राप्त कर लिया है। गवन भाठी है प्रेम का पोचा लगा दिया है। यह अमृत रस मिलता है। जिस पर किरपा करते है वही साच पिआला पीता है। जो अमृत का वापारी है वह खाली भाव नही रखता। गुरु की साखी अमृत बाणी है पीते ही स्वीकार हो जाते है। दरसन को पिआरा वैकुण्ठ मुक्ति नही चाहता। प्रभु की सिफत करने वाला जूए मे जनम नही हारता। नानक जी फरमाते है हे भरथरी हरी सुनो जोगी केवल अमृत पीता है।

DATE

Page 130

शब्द 39

इकवारीजीऊवारी, कलि मैनाम सुणाविआ।
संत पिआरे सच्चे धारे, वडभागी दरशन पाविआ॥
अंतर अलाव न जाई लाविआ, नाम रतन लै गुणी रखिआ॥
अगम अगोचर सब तो ऊंचा, गुरु के शब्द लखाविआ॥
साधिक सिध जिसै कउ फिरदे।
ब्रह्मे इंद्र धिआइन हिरदे॥
कोट तेतीस खोजहि तां कै।
गुरु मिल हिरदै गाविआ॥
आठ पहर तुध जापै पवना।
धरती सेवक पाइक चरना॥
खाणी बाणी सरब निवासी
सभना के मन भाविआ
साचा साहिब गुरु मुख जापै।
पूरे गुरु के शबद सिञापै॥
जिन पीआ सेई तृपतासे सचे सच अघाविआ॥

राम जी राम सांम

DATE

शबद 39

भावार्थ

कलियुग में जो हरि नाम की महिमा सुनाते हैं उन पर हम बलिहार जाते हैं। संत प्यारों पर जो सच धारण करते हैं उन का दरशन कोई बड़-भागी पाते हैं। नाम रतन को अन्तर में गुप्त रखा है भगवान अगम अगोचर सब से ऊंचा है. गुरु शबद द्वारा दिख जाता है। ब्रह्मा इन्द्र कोटि तेतीस देवता जिन का ध्यान धरते हैं, वह सतगुरु के मिलने से दिखते हैं। पवन, धरती सेवक स्वामी बाणी सर्व निवासी आप का जाप करते हैं। आप सब के मनों को अच्छे लगते हैं। गुरुभाव सदा सच्चे नाम का जाप करते हैं। पूरे गुरु के शबद से जान लेते हैं। जो अमृत रस पीते हैं वही तृप्त होते हैं। वह सच में ही समा जाते हैं।

राम जी राम राम

classmate

PAGE

शबद 40

महिमा साधु संग की सुनहु मेरे मीता।
मैल खोई कोटि अघ हरे निरमल भये चीता॥
पिंघुल पर्वत पार परे, खल चतुर बकीता।
अंधुले त्रिभुवण सूझिआ, गुरु भेट पुनीता॥
ऐसी महिमा गोविंद की करि हलतु पलित॥
जो जो कीन्हो आपनो, तिस अभय दान दीता।
सिंह बिलाई होय गयो तृण मेरु दिखीता॥
श्रम करते दम आढ़ को, ते गनी धनीता।
कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुणीता॥
कर किरपा मोहि नाम देहो नानक दर सरीता॥

राम जी राम राम

श्री राम

classmate

79

DATE

शब्द ५०

भावार्थ

महाराज जी साधु संगत की महिमा वर्णन करते हैं। उन के संग से सारी मैल उतर जाती है। करोड़ो पापो का नाश हो जाता है चित निर्मल हो जाता है। लंगड़ा पर्वत पर चढ़ जाता है खल चतुर हो जाते है। अंधा त्रिभुवन देखता है गुरु जी की भेंट से पवित्र हो जाता है। गोविन्द जी की सेवा शक्ति है जो कीड़े को भी हाथी बना देती है। जिन जिन को प्रभु ने अपना बना लिया उन्हे अभय दान दे दिया। शेर बिल्ली हो जाता है तिनका पहाड़ दिखता है। मेहनत करने से धनी हो जाते हैं। उन की वडाई नही कही जा सकती। महाराज जी फरमा रहे हैं हे प्रभो! आप मुझ नाम दान दीजिए मै आप के दर पर पड़ा रहूं।

राम जी राम राम

DATE

शबद ५।

आओ सखी हरि मेल करेहा मेरे प्रीतम का मै देह सनेहा।

मेरा प्रेमी मित्र सखा सो प्रीतम भाइ।

मै दसे हर नर नै हरिरु जीओ॥

हरि गुरु पाइरु, हर गुरु गुरिरु।

हरि२ नाम कथा नित सुरिारु॥

मिल सत संगत हरि गुरु गारु।

१ जग भउजल दुतर तरिरु जीओ॥

मेरी वेदन हरि गुरु पूरा जाणै।

हउ रहन सकां बिन नाम वखाणै।

मै अउखध मंत्र दीजै गुरु पूरे॥

मै हरि हरि नाम उधारिरु जीओ।

हम चात्रिक दीन सतगुरु शरणाइ।

हरि हरि नाम बूंद मुख पाई॥

हरि जलनिधि हम जल के मीने।

जन नानक जल बिन मरिरु जीओ।

DATE

शब्द 41

भावार्थ ।

आओ सखियो मिलो! मुझे मेरे प्रीतम का सन्देश दो। वह मेरे मित्र सखा है मेरे प्रीतम भाई हैं। वह मुझे हरि की राह दिखाते हैं। हरि गुण पढ़ो। हरि गुण सुनो। हरि के नाम की कथा सुनो। संतो के साथ बैठ कर हरि गुण गाओ। ऐसा करने से यह डरावना संसार सागर से तर जायेगें। मेरी पीड़ा केवल हरि प्रभु जानते है। अब मै नाम के बिना नही रह सकती। हे सतगुरु! मुझे नाम की दवाई दो। मेरा केवल नाम से ही उद्धार होगा। मै दीन चातृक सतगुरु जी की शरण मे हूँ। हरि नाम की बूंद मेरे मुख मे डालो। हरि सरोवर है हम उन की मछलियां हैं। महाराज जी फरमाते है जल के बिना हम मर जायेगें।

राकेश राम राय

DATE

शब्द 42

साखीहो सहेलिड़हो मेरा पिर वणजारा राम
हरिनाम वणजड़ींआ रस मोल अपारा राम
मोल अमोलो सच घर ढोलो,
प्रभ भावै ता मुंध भली ॥
इक संग हरि कै करहि रलिआं ।
हउ पुकारी दर खली ॥
करन कारन समरथ श्रीधर ।
आप कारज सवारे ॥
नानक नदरी धन सोहागण ।
शबद अभ साधारे ॥

रामजी रामराम
श्रीराम

83

शबद 42

भावार्थ।

हे सखिओ सहेलिओ मेरा प्रीतम व्यापारी है। वह हरि नाम का व्यापार करता है उस मे अमोल रस है। वह सच को ही तोलता है। प्रभु को भी जाकर मिली हूँ। एक आत्मा तो हरि के संग केल कलोल करती हैं, मैं दर पर खड़ी हूँ। प्रभु श्रीधर आप ही करता कारण हैं, वही सारे काज सवारता है। महाराज जी फरमाते हैं, वह आत्मा रूपी स्त्री धन है सोहागिन है जिसे शबद का आधार मिल गया है।

राम जी राम राम

DATE

शबद 43

गुरसिख मीत चलहु गुर चाली।
जो गुर कहै सोई भल मानहु॥
हरि हरि कथा निराली।
हम अधुलो अंध बिखै बिख राते।
क्यो चालहि गुर चाली॥
सतगुर दइआ करे सुखदाता।
हम लावेह आपन पाली॥
हरि के संत सुणहु जन भाई।
गुर सेवहु बेगि बेगाली॥
सतगुर सेव खरच हरि बांधहो।
मत जाणहो आज कै काली॥
हरि के संत जपहो हर जपणा।
हरि संत चलेह हरि नाली॥
जिन हरि जपिआ से हरि होए।
हरि मिलिआ केलि केलाली

PAGE

classmate

DATE

शब्द 43

भावार्थ

हे गुरुसिखो! गुरु की आज्ञा मे चलो; जो गुरु कहते है उसे भला कर के मानो, हरि की कथा निराली है। हम अंधे है संसार के विषयो मे रत है। कैसे गुरुजी की आज्ञा मे चले? सतगुरु सुखदाता आप दया कर वह हम अपनी लाईन मे लगा लें। हरि के भाईजन संतो सुनो! हम गुरु जी की सेवा जल्दी जल्दी कर लें। सतगुरु की सेवा रूपी धन अपने पल्ले बांध लें। कल का क्या पता है। हरि के संतो आप केवल हरि नाम का जाप करो। संतहुजनोसाथ चलोगे। जिन्होने नाम जपा है वह हरि रूप ही हो गये। हरि संसार मे केल कलोल करते हुए ही मिल जाय।

राम जी राम राम

DATE

शब्द 44

हरि का विलोवना विलोवहो मेरे भाई।
सहज विलोवहो जैसे तत न जाइ॥
सनक सनंद अंतत नही पाइआ।
वेद पढे पढ बृहे जनम गवाइआ॥
तन कर मटकी मन मांहि विलोई।
इस मटकी मे शबद सजोई।
हरि का विलोवना मन का विचारा।
गुर परसादि पावै अमृत धारा॥
कहे कबीर नदर करे जे मीरा
राम नाम लग उतरे तीरा॥

राम जी राम राम

श्रीराम

DATE

शब्द पद

भावार्थ

अपने मन रूपी भाई को समझाओ। हे मेरे भाई तू नाम का बिलोवना बिलोवो। सहज अवस्था बनी रहे जिससे तत्व न जाये। सनक सनन्दन ने भी आप का अन्त नहीं पाया। ब्रह्मा जी ने भी वेद पढ़ २ कर जनम खो दिया। शरीर को मटकी बनाओ मन मे बिलोवो, इस मटकी मे शब्द सम्भाल कर राखो। मन के विचार ही हरि का बिलोवना है। गुरु की कृपा से यह अमृत प्राप्त हो जाता है। कबीर जी फरमाते है अगर प्रभु कृपा करें तो, राम नाम से प्यार हो जाते हैं।

राम जी राम राम

शबद 45

हरिजन को हरि दीन वडाई।
हरिजन हरि कारै लावैह॥
जितने जी जंत प्रभ कीन्हे।
तितने सिर कार लिखावैं॥
सतगुरु हरि हरि नाम दृढ़ावैं।
हरि बोलो गुरु कै सिख मेरे भाई।
हरिऊँ जल जगत तरावैं।
जो गुरु को जन पूजे सेव।
सो जन मेरे हरि प्रभ भावै॥
हरि की सेवा सतगुरु पूजो।
कर किरपा आप तरावैं॥
भरम भूले अज्ञानी अंधुले।
भरम भरम फूल तोरावैं
निरजिऊ पूजे मड़ा सरेवहि सभ बिरथी घाल गवावै
ब्रह्म बिन्द सो सतगुरु कहिए हर हर कथा सुणावै

classmate

DATE

शब्द 45

भावार्थ।

हरि हमेशा अपने जन को बड़ाई देते हैं। हरि जन हमेशा पवित्र होते हैं। जितने भी जन्त हरि जी ने बनाये है उन्हे अपने २ कार्य मे लगाया है। सतगुरु हरि हरि नाम को पक्का करते हैं। वस हरि २ नाम बोलो यही सिखाते हैं। हरि सारा संसार तार देते हैं जो गुरु की सेवा करते हैं वही हरि को अच्छे लगते हैं। सतगुरु की पूजा हरि की सेवा है। किरपा कर के आप ही तरा दो। हम भरमो में भूले हुए हैं, अज्ञानी हैं, अन्धे हैं। भरम भरम के कुछ प्राप्त नहीं किया। मढ़ियों की पूजा करते है। यह सब व्यर्थ धालना है। जो ब्रह्म को जान लेते हैं वही सतगुरु है और जो कथा सुनाते हैं।

राम जी राम राम

तिस गुरु को दादन जोजन पार परम्बर ।
बहु बिधि सत्कर ध्यान संचहो ॥
तिस पुन्य की फिर तोट न आवे ॥
सतगुरु देऊ प्रत्यक्ष हरि मूरत ।
जो अमृत वचन सुनावै ।
नानक भाग भले तिस जन के ।
जो हरि चरणी चित लावे ।

राम जी रामराम

श्री राम

classmate

DATE

शब्द पद 5

भावार्थ।

ऐसे गुरु जी को भोजन कपड़े पार पत्थर अर्पण करें। बहु प्रकार से सत इच्छा करो। फिर इस प्राय की कमी नही आयेगी। सतगुरु देव प्रत्यक्ष हरि मूरत हैं। जो अमृत वचन सुनाते हैं। उन के बड़े भाग्य हैं जो हरि चरणों मे चित लगाते है।

राम जी राम राम

शब्द 46

जो जन भजन करे नित तेरा।
तिसे अंदेसा नांही॥
सतगुरु चरणा लगे भउ मिटिआ।
हरि गुन गाये मन मांही॥
करन करावन हरि अन्तरजामी।
जन अपने की राखै॥
जय जय कार होत जग भीतर।
सबद गुरु रस चाखै॥
प्रभ जी तेरी ओट गोसांइ।
तू समरथ सरनि का दाता॥
आठ पहर तुमहि धियाई॥
सुख सहज आनन्द घनेरे।
सतगुरु दिआ दिलासा॥
जिसु घर आइ शोभा सेती पूरी होई आसा।
पूरा गुरु पूरी मत जाकी पूरी प्रभ के काम
गुर की सरणी लाग तरिओ भवसागर जन नानक हरि 22
नाम

शबद 56

भावार्थ।

जो भगत प्रभु का भजन करते हैं उन्हें कोई संशय नहीं रहता। मन में हर गुन गाने से सतगुरु जी के चरणों से मिलने से सब भय दूर हो जाते हैं। भगवान अन्तरयामी हैं करन करावन हैं अपने भक्त की सदा लाज रखते हैं। जो गुरु जी के शबद का रस चखता है उस की संसार मे जय जय कार होती है। हे प्रभु! हे गोसाई जी! मुझ तो केवल आप का ही आश्रय है। आप समरथ हो शरण देने वाले हो, आठ पहर आप का ही ध्यान करूं। सतगुरु जी ने दिखला दिया कि भक्ति मे सुख सहज आनन्द ही आनन्द है। सारी आशाएं पूर्ण हो गई और अपने घर जीत कर आये। जिस के गुरु पूर्ण हैं उस की मति भी पूरी है उन के कार्य भी सारे पूर्ण हैं। महाराज फरमाते हैं हरि नाम जपने से गुरु जी के चरणों से लगने से भव सागर से तर जाते हैं।

DATE

शबद 47

हरि जी माता, हरि जी पिता, हरि जीओ प्रतिपालक
हरि जी मेरी सार करें हम हरि के बालक ।।
सहजे सहज खिलाइदा नही करदा आलक।
अऊगण को न चितारदा, गल सेती लायक
मुँहि मंगा सोई देवदा. हरि पिता सुखदायक
ज्ञान राम नाम धन सौंपोयन इस सौदे लायक
साझी गुरु नाल बहालिहा, सरब सुख पायक
मै नालहों कदे न वीछुड़े हरि पिता सभना गल लायक

राम जी राम राम
श्री राम

शबद47

भावार्थ।

हरिजी ही मेरे माता पिता हैं। वही मेरी प्रतिपालना करते हैं। हम उन के बच्चे हैं वही मेरा पूरा ख्याल रखते हैं। कभी आलस्य नहीं करते सहजअवस्था में मुझे खिलाते पिलाते हैं। मेरे अवगुणों पर ध्यान न करते हुए मुझे गले से लगा कर रखते हैं। वह मेरे सुखदायक पिता है मैं मांगा सब कुछ देते है। वह ज्ञान की राशि नाम धन सौंप कर सच्चे सौदे के लायक बनाते हैं। यह सर्वसुखदायक है उन्हों ने मुझे अपना साझीदार बना लिया है। गुरुजी के साथ बिठा दिया है। यह मेरे पिता है सर्वसमरथ है यह मेरे से कभी भी अलग न हो।

रामजी रामराम

शब्द 58

नाम निरंजन नीर नारायण।
रसना सिमरत पाप बिलायण॥
नारायण सब माँहि निवास।
नारायण घट घट परगास॥
नारायण कहते नरक न जाहिं।
नारायण सेव सगल फल पाहिं॥
नारायण मन माँहि आधार।
नारायण बोहिथ संसार॥
नारायण कहत जम भाग पलायण
नारायण दंत भाँने डायन॥
नारायण सद सद बखशंद।
नारायण कीन्हे सुख अनंद॥
नारायण प्रगट कीन्हो प्रताप।
नारायण संत को माई बाप॥
नारायण साध संग नरायण, बारम्बार नारायण गाय
बसत अगोचर गुर मिल लही, नारायण ओट नानक दास

शब्द 48

भावार्थ ।

भगवान जी का नाम निरंजन है जल मे उन का वास है। उन के नाम का सिमरन करने से सब पाप भग जाते हैं। नारायण जी सब के हृदयो मे वास करते हैं। घर घर मे उन्ही का प्रकाश है। नारायण जी का नाम जपने से नरक नही जाते उन की सेवा करने से सब फल प्राप्त होते हैं। नारायण जी का ही मन में आधार है, नारायण संसार से पार करने का जहाज़ हैं। नारायण जी का नाम लेने से जम भाग जाते हैं। नारायण जी का नाम माइआ के दांतो को तोड़ देती है। नारायण जी सदा क्षमा करते हैं। उन के नाम ने सुख आनन्द कर दिया है। नारायण जी के नाम से प्रताप प्रगट होता है। नारायण जी संतो के माता पिता हैं। संतो के संग नारायण वार २ गाओ। नामदेव जी ने नारायण नाम जी का आश्रय लिया। गुरु जी को मिलकर अगोचर वस्तु मिल गई।

शबद 49

साहिब मेरा एको है, एको है भाई एको है ।

जेता सबद सुरति धुनि तेती जेता रूप काया तेरी ।।

तूँ आपे रसना आपे बसना, अवर न दूजा कहउ माई ।

आपे मारे आपे छोडै, आपै लेवै देई ।

आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ।।

जो किछु करना सो कर रहिआ ।

अवर न करना जाई ।।

जैसा वरतै तैसो कहिए ।

सब तेरी वडिआई ।।

कलि कलवाली माइआ मद मीठा ।

मन मतवारा पीवत रहै ।।

आपे रूप करे बहु भाँति, नानक बपुडा एव कहै

रामजी राम राम

श्री राम

DATE

शब्द ५१

भावार्थ।

गुरुनानक जी फरमाते हैं मेरा तो एक ही साहिब है।
जैसा शब्द धुनि आप। सब आप का ही है।
आप ही बसता है। आप ही रचता है, दूसरा कोई नहीं।
आप ही मारते हैं आप ही छोड़ते हैं आप ही देते लेते
हैं। आप ही देख कर खिल जाते हैं, आप ही कृपा करते
हैं, जो कुछ करता है वह आप ही कर रहे हैं।
दूसरा नहीं कर सकता। जैसा यह करते हैं वैसा
ही हम कहते हैं, सब आप की बड़ाई है। कलियुग
में यह माया का मद बहुत मीठा है। मन मतवारा
पीता रहता है। आप ही अपने कई प्रकार के
रूप बना लेते हैं। नानक दास जी ऐसे फरमाते
हैं।

राम जी राम राम

शबद 50

मेरे राम को भंडार, खात खरच कछु तोटि आँ
अंत नही हरि जे पारावार।
रतन जवेहर नाम, सत सतोख गिआन।
भाव सहज दइआ का पोता।
हरि भगतौ हवाले होता॥
कीरतन निरमोल क हीरा।
आनंद गुनी गहीरा॥
अनहद बानी पूँजी (सतहा दथरावी पूँजी)
सुन्न समाधि गुफा तह आसन, केवल ब्रह्म पूर्ण सहवासन
भगत संग प्रभ गोष्ट करत, तह हरख न सोग न जनम न मरणा।
कर किरपा जिस आप दिवाया।
साध संग तिन हरि धन पाइआ॥
दइआल पुरख नानक अरदास।
हरि मेरी वरतनि हरि मेरी रास॥

राम जी राम राम

DATE

शब्द50

मेरे राम जी के आतुर भंडार भरे हैं। खाते पीते
खर्च करते कभी कमी नहीं आती इन का कोई पारावार
नहीं है। नाम रतन जवाहर हैं, सत संतोख ज्ञान है।
सहज अवस्था सुख यह दृष्या के पोता है। यह
हरि भगतों के वश में है। कीरतन अमूल्य हीरे हैं
यह गुणों का खजाना है आनंदमय है। अनहद बाणी
की पूँजी संतो ने अपने वश मे रखी हैं। सुन्न समाधि
गुफा मे आसन जहाँ पूर्ण ब्रह्म का सहवास होता है।
प्रभु भक्तो के साथ ज्ञान चर्चा करते हैं। वहाँ न हर्ष है
न शोक है न जन्म मरण है। संतो के संग हरि धन
उन्होंने ने ही पाया है जिस को कृपा कर के प्रभु ने
आप दिया है। नानक जी अरदास करते हैं। हरि ही
मेरी वरतण है, सब कुछ हरि जी ही हैं।

राम जी राम राम

DATE

शबद ५।

सजना संत आओ मेरै।
आनदा गुण गाए मंगल॥
कसमल मिट जाहि परेरै।
संत चरण धरौ माथै।
चांदना गृह होय अंधेरै॥
संत प्रसादि कमल बिगासै।
गोविन्द भजो पेख नेरै॥
प्रभ किरपा ते संत पाये।
बार बार नानक ओह बेरै॥

राम जी राम राम
श्रीराम

DATE

शब्द 51

भावार्थ

हमें सदा संतो को बुलाना चाहिए क्योंकि वह आनन्द और मंगल के गुण गाते हैं। उस से सारे पाप मिट जाते हैं। संतो की चरण रज मस्तक पर धारण करनी चाहिए जिससे हमारे अन्दर अज्ञान का विनाश हो जाता है और प्रकाश हो जाता है। संतो की कृपा से, हमारा हृदय रूपी कमल खिल उठता है। गोविन्द का भजन शुरू हो जाता है और भगवान निकट दिखते हैं। प्रभु कृपा से संतो की प्राप्ति होती है। नानक जी फरमाते हैं कि संतो को बार 2 निकट समझते हुए प्रणाम करना चाहिए।

राम जी राम राम

श्री राम

9.2.2010

DATE

शबद 52 Page 731

हमरी जात पात गुरु सतगुरु, हम बेचिओ सिर गुर के
मन राम नाम आराधिआ गुरुशबद गुरु गुर के ॥
सभि इच्छा मन तन पूरिआं, सब चूका डर जम के ॥
मेरे मन गुण गावहु राम नाम हरि के ॥
गुरु तुठै मन परबोधिआ, हरि पीआ रस गट के ॥
सतसंगत उतम सतगुरु केरी, गुन गावै हरि प्रभ के
हरि किरपा धार मेलहु सतसंगत उतम सतगुरु केरी
हरि किरपा धार सेवहु सतसंगत गुन गावैं हरि प्रभ के ॥
हम धोवहु पग जन के
राम नाम सभ है राम नामा रस गुरमति रस रसके
हरि अमृत हरि जल पाइआ, सभ लाथी तिस तिस के
जन नानक नाम परिओ गुरु चेला गुरु राखहु
लाज जन के

जी
राम राम राम
श्रीराम

DATE

शबद 59 भावार्थ।

हमारी जाति पाति गुरु सतगुरु है, हमने सिर उनके आगे बेच दिया है। हे मन! तू सदा राम नाम की आराधना कर गुरु के शबद को पकड़ रख। सब मन की इच्छाएं पूरी हो जायेगी जम के डर सब खत्म हो जायेंगे। सतगुरु प्रसन्न हो गये, मन जाग गया। हरि रस खूब पीआ। सतगुरु की संगत उत्तम है। हरि के गुन गाते हैं। हरि जी कृपा करें हम संतो की सेवा करें हम सतगुरु जी के चरण पावें। सब राम नाम ही है। गुरमत से रस प्राप्त होता है। हरि नाम रूपी अमृत जल प्राप्त हुआ, सब प्यासें मिट गईं। नानक जी फरमाते हैं, हमारा नाम गुरु चेला पड़ गया है! हे सतगुरु जी! आप हमारी लाज रखेंगे।

राम जी राम राम

DATE

शबद 53

मोहि गरीब को लेहो राखि नानक आए पर शरणाय।
सगले सुख जप एकै नाम, सगल धर्म हरि के गुण गाय।
महा पवित्र साध का संग जिस भेटत लागै प्रभ रंग॥
गुर प्रसाद ओइ आनन्द पावै, जिस सिमरत मन होइ प्रगास॥
ता की गति मति कहनु जावै।
बरत नेम मज्जन तिस पूजा, वेद पुराण तिन सिमरत सुणीजा॥
महा पुनीत जा का निरमल थान साधसंगत जा कै हरि नाम।
प्रगटिओ सो जन सगले भवन पतित पुनीत ता की पग रेण॥
जा को भेटिओ हरि हरि राय, ता की गति मति कथन न जाय॥
आठ पहर कर जोड़ धिआवहु उन साधा का दरसन पावहु॥

राम जी राम राम

श्री राम

DATE

शब्द 53

भावार्थ ।

मुझ गरीब को अपने मे मिला लो, नानक जी फरमाते हैं, मै आपकी शरण मे आन पड़ा हूं । एक नाम में ही सब सुख हैं । हरी के गुण गाना ही सब धर्म है । संतो का संग महा पवित्र है । जिन के मिलने से प्रभु का रंग लग जाता है । गुरु जी की कृपा से वह आनन्द पाता है । जिस के सिमरन से मन मे प्रकाश हो जाता है । प्रभु की गति मति कही नही जा सकती । वरत नेम स्नान पूजा । वेद पुराण इन को सुनना । प्रभु का स्थान महा पवित्र है । साधसंग से हरि नाम की प्राप्ति होती है । वह प्रभु सारे शरीर मे प्रगट हो गये है उन की वस्तुओं की चरण रज महा पवित्र है । जिन को हरि मिल जाये हैं उन की गति मति कही नही जा सकती । उन का संतो का दर्शन मिले जिससे हम आठ पहर हाथ जोड़ कर ध्यान करें ।

शबद 54

टूटी तंत रबाब की वाजै नाही वियोग।
विछुड़ियां मेले प्रभु नानक कर संजोग।।
णा को मेरा किस गही, णा को होआ न होग।
आवण जाणा विगुचिए दुविधा व्यापै रोग।
णाम विहूणा आदमी कल्लर कंध गिरंत।
विण नावै किउ छूटिए जाए रसातल अंत।।
गणत गणावै आखरी अजगणत साचा सोई।
अज्ञानी मत हीण है, गुरु बिन ज्ञान न होई।।

राम जी राम राम
श्री राम

classmate

DATE

शबद 54

भावार्थ।

रबाब की तार टूट गई तो वह बजती नही।
नानक जी फरमाते हैं ऐसा संयोग बना दो। विछुड़ो
का मेल हो जाये। न कोई मेरा है न मै किसी का
हूँ न हुआ है न होगा। आवण जावण खत्म हो
जाये दुविधा का रोग न व्यापे। नाम के
बिना आदमी ऐसा है जैसे कल्लर की दिवार
गिर जाती है। बिन नाम के दरबार। नही
मिल सकता। अन्त मे रसातल मे चला
जायगा। संसार मे केवल भगवान जो गिनती
मे नही आते। अज्ञाती की मत नही है और
गुरु जी के बिना। ज्ञान नही हो सकता।

राम जी राम राम

शबद 55

सतगुरु वचन तुम्हारे, निगुरा निसतारे।
महा विवादी दुष्ट अपवादी ते पुनीत संघारे
जनम मंवते नरक पड़ते तिन के कुल उद्धारे॥
कोई न जानै कोई न मानै, से प्रगटहारि द्वारे।
कवन उपमा देऊ कवन वडाई, नानक खिन खिन वारे

राम जी राम राम
श्री राम

शबद ५५

भावार्थ!

हे सत्गुरु जी! आपके वचन निगुरों का भी निसतारा कर देते हैं। महाविषादी हो, दुष्ट हो, अपराधी हो, उन को भी आप पवित्र कर देते हैं। जनमों मे आने जाने वाले नरकों मे पड़ने वाले, उन के कुलों का भी उद्धार हो गया। जिन को कोई नही जानता, कोई नही मानता वह गुरुद्वार प्रगट हो जाते हैं। महाराज नानक देव जी फरमाते है, आपकी कितनी उपमा करें कितनी वडिआई करूँ हजार पर आप पर वारी जाते हैं।

राम जी राम राम

classmate

DATE

शबद 56

नानक चिंता मत करहु, चिंता तिस ही हे।
जल मै जंत उपाइअनु तिना भी रोजी दे॥
ओथै हटु न चलई ना को किरस करे।
सौदा मूलु न होवई ना को लए न देइ।
जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ॥
विचि उपाए साइरा तिना भी सार करेइ।
नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हे॥

राम जी राम राम

श्री राम

DATE

शब्द 56

भावार्थ।

महाराज जी फरमाते है चिंता न करो। तुम्हारी सारी भगवान जी को है। जल में जीव जन्तुओं को भी ख्याल रखते है उन को भी रोजी देते है। वहाँ कोई व्यापार नही चलता। वहा कोई सौदा नही होता। न कोई लेता है न देता है। भगवान जी सब जीवों के आधार हैं, वह सब खाना। आहार देते हैं। जो भी संसार मे पैदा किये हैं सब को पार करते हैं। चिंता बिल्कुल नही करनी।

राम जी राम राम।

शबद 57

मेरे राम हम नीच करम हरि मेरे।
गुणवंता हरि हरि दइआल, कर किरपा
बखश अवगुण सभ मेरे॥
कंचन नारी मे जीउ लुभत है मोह मीठा
माइआ।
घर मन्दिर घोड़े खुसी, मन अनरस लाइआ॥
हरि प्रभ चित न आवही, किउ छूटा मेरे हरि
राइआ॥
किछु रूप नही किछु जात नांही, किछु ढंग न मेरा
किआ मुंह लै बोलह गुण विहूणा
नाम जपया न तेरा॥
हम पापी संग गुर उबरे, पुन सतगुर केरा॥
सभ जीउ पिंड मुख नक दीआ, वरतन को पाणी
अन्न खाणा कपड़ पैनण दीआ, रस अनर भोगाणी॥
जिन दीए सो चित न आवई पसु हउ करे
जाणी॥
सभ कीता तेरा वरतदा तूं अंतरजामी॥
हम जंत विचारे किआ करे, सभ खेल तुम सुआमी॥
जन नानक हर विहाझिआ, हरि गोलम गोलामी॥

114

DATE

शब्द 57

भावार्थ

हे मेरे राम जी! यह सब नीच कर्म मेरे है। आप प्रभवंता हो! दयालु हो! किरपा करो सब अवगुण छमा कर दो। मेरा मन कचंन मे नारी मे लग गया है मोह मीठा लगने लगा है। मेरा मन घोड़े खुशियां दूसरे रसों मे लग गया है। इनसे मै कैसे छूट सकता हूं? मेरा न कुल है न जात है न ढंग है गुणों से वंचित हूं क्या बोलु नाम भी नही जपा आप का। हम पापी सतगुरु के साथ उधार हो जाये। सारा प्रताप सतगुरु जी का है। आपने पिंड दिया जीवात्मा डाली प्राण नाक दिया। बसने को पानी दिआ। खाने को अन्न बरतने को पानी कई भोग रस दिए। जिन्होने यह सब दिआ वह चित मे नही आते। पशुओ की तरह हंकार करता हूं। आप अन्तरयामी हू सब आप का दिआ है। रहा है हम जन क्या करें सब खेल आप का है। बस मै तो गुलामों का भी गुलाम हूं (नानक जी)

classmate PAGE

शबद 58

महिमा कहीन जाइ गुरु समरथ देव।
गुरु पारब्रहम परमेसवर, अपरम्पर अलख अभेव।
सो सतगुरु धन धन जिन भरम गढ़ तोड़िया।
सो सतगुरु वाहु वाहु जिन हरि सिउ जोड़िया ॥
नाम निधान अखुट गुरु देइ दारूओ।
महारोग विकराल तिन्है बिदारूओ ॥
पाइआ नाम निधान बहुत खजानिआ।
जीता जनम अपार आप पछानिआ ॥
नानक सतगुरु भेटिए पूरी होवै जुगति।
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ, खावंदिआ
विचे होवै मुकति।

राम जी राम राम
श्रीराम

DATE

शब्द 58

भावार्थ

समरथ गुरुदेव जी की! महिमा नहीं कह सकते। गुरु पारब्रह्म हैं, अलख है, अभेव है। सो सतगुरु धन धन है जिन्होंने सारे भरम खत्म कर दिये। वह सतगुरु धन धन है जिन्होंने प्रभु संग जोड़ दिये। नाम का खजाना, दास यह सतगुरु जी ने दिआ। सारे महारोग खत्म कर दिये। नाम का खजाना मिल गया। अपने आपको पहचान कर यह अपार जनम जीत लिया। नानक जी फरमाते हैं, सतगुरु जी के मिलने से मुक्ति वता ही खाते हुए हँसते हुए खेलते हुए, पहनते हुए बीच मे से मुक्त रहें।

राम जी राम राम

शबद 59

सा रसना धन धन है मेरी जिंदड़िए
गुण गावै हरि प्रभ केरे राम।
ते स्रवण भले सोभनीक हहि मेरी जिंदड़िये
हरि कीरतन सुणहि हरि तेरे राम।
सो सीस भला पवित्र पावन है मेरी जिंदड़िए
जो जाइ लगै गुर पैरे राम।
गुर विटहु नानक वारिआ मेरी जिंदड़िए
जिन हरि हरि नाम चितेरे राम।
ते नेत्र परवाणु हैं मेरी जिंदड़िए
जो साधू सतगुर देखहि राम।
ते हसत पुनीत पवित्र हैं मेरी जिंदड़िए
जो हरि जस हरि लेखहि राम।
तिस जन के पग नित पूजिए मेरी जिंदड़िए
जो मारगि धर्म चलेसहि राम।
नानक तिन विटहु वारीआ मेरी जिंदड़िए
हरि सुणि हरि नाम मंनेसहि राम

DATE

शब्द 59

भावार्थ

जो रसना प्रभु के गुण गाती है वही रसना धन्य है।
वह श्रवण धन्य धन्य हैं जो हर कीरतन सुनते हैं।
वह सिर भी भला है जो गुरुद्वारे सतगुरु के चरणों
में लग जाता है। उन गुरु पर हम वारी जाते हैं
जिन का चित हरि नाम में लगा रहता है। वह
नेत्र भी धन्य हैं जो सतगुरु जी के दर्शन करते हैं।
वह हाथ भी पुनीत हैं जो हरि का नाम लिखते
हैं। उन के चरणों की पूजा करनी चाहिए
जो धर्म के मार्ग पर चलते रहते हैं। महाराज
जी फरमाते हैं हे मेरी जिन्दड़ीये! जो हर नाम
को सुन के मन में धारण करते हैं।

राम जी राम राम
28.2.2010

शबद 60 हि॰30

वडे मेरे साहिबा। वडी तेरी वडआई।
तूं सचा साहिब सच है, सच सचा गोसाई॥
तुध नूँ सभ धिआइंदी, सभ लगै तेरी पाई।
तेरी सिफति सुआलिओ सरूप है
जिनि कीती तिस पार लघाइ।
गुरमुखा नू फलु पाइंदा।
सचि नामि समाइ।

राम जी राम राम

श्रीराम
9.2.2010

DATE

शबद 60

भावार्थ –

हे मेरे बड़े साहिब जी। आप की बड़ाई बहुत बड़ी है, आप सच्चे साहब हो सच गोसांई (गुरु) हो। सब आप का ध्यान करते हैं, सब आप के चरणों में झुकते हैं, जो आप की सराहना करते हैं, वह संसार से पार हो जाते हैं। गुरमुखों को सच्चे नाम का फल मिलता है।

राम जी राम राम

श्रीराम –

classmate

शबद 61 — बिह 628

घुर की बाणी आई तिन सगली चिंत मिटाई

दइआल पुरख मेहरवाना, हरि नानक साच वखाना।

परमेसवर दिता बन्ना दुख रोग का डेरा भन्ना।

अनद करे नर नारी हरि हरि प्रभ किरपा धारी।

संतह सुख होआ सभ थाई।

पारब्रह्म पूरन परमेसर रव रहिआ सभनी जाई।

राम जी राम राम

श्रीराम

classmate

DATE

शब्द 61

भावार्थ।

यह गुरुबाणी अलौकिक बाणी है यह सब चिन्ताए मिटा देती है। महाराज जी फरमाते हैं, भगवान दयालु प्रभु परम भगवान हैं, मेहरबान हैं, हम सच कहते हैं। परमेश्वर जी ने अपना आश्रय दे कर सब भावों को दूर कर दिया है। प्रभु ने अपनी किरपा कर दी है सब नरनारी आनन्दमय हैं। पारब्रह्म परमेश्वर सर्वव्यापक है, इस लिए सब जगह मै सुखमय हो गया हूँ।

राम जी राम राम

शब्द 62

तिलै सरैवहु प्राणीहो जिस दैनाऊपल्लै।
एथै रहहो सुहेलिहां, अगै नाल चलै।
धार बंधहु सच्च द धरम की
गिड थम्म अहल्लै॥
ओट लेहो नारायणी, दीन दुनियां मल्लै॥
नानक पकड़े चरणा हरि
तिस दरगह मल्लै।

राम जी राम राम
श्रीराम

classmate PAGE

DATE

शब्द 62

भावार्थ।

हे सहेलिओ! प्राणी हो जिस के नाम पाप महत्वा है उन्हीं की सेवा करो। इस संसार में सुखी रहोगा अन्त में यह धन साथ चलेगा। सच, धरम का घर बनाओ, पक्की नींव रखो। नारायण जी का आश्रय लो सारा संसार आपको आदर देगा। महराज जी फरमाते हैं, मैंने हरि के चरण पकड़ लिए है और दरगाह में भी अपना स्थान बना लिया है।

राम जी राम राम

DATE

शबद 63

हम तिन के चरणा पखाले दे।
धूड़ धूड़ घोल घोल पीजे॥
जो गुरमुख नाम धिआइदें, तिन दरसन दीजे॥
गुरमुख सखी सहेलिआं, से आप हरि भाइआं।
हरि दरगाह पहनाइआं, हरि आप गलि लाइआ।
पान सुपारी खातीआं, मुख बीड़िआं लाइआं॥
हरि हरि कदे न चेतिओ, जम पकड़ चलाइआ।
जिन हरि नामा हरि चेतिआ
हृदय उर धारे।
तिन जम नेड़ न आवही गुरसिख गुर पिआरे।
हरि का नाम निधान है, कोई गुरमुख जाणे।
नानक जिन सतगुर भेटिआ रंग रलीआं
माणे।

राम जी राम राम

श्री राम

DATE

शबद 63

भावार्थ।

इस जन के चरण धोते है उन की चरण रज धो धो कर पीते हैं। जो गुरमुख आप के नाम का ध्यान करते हैं ? हे प्रभो। आप उन को दर्शन दो। हे गुरमुख सखिओ सहेलिओ। आप तो हरि को भा गई हो। आप हरि जी की दरगाह में, हरि जी ने आप ही आप सब को गले लगा लिया है। पान सुपारी बीड़िया खाते) हैं। हरि जी के नाम का कभी भी चिंतन नहीं किया जमो ने आ कर पकड़ लिया। जिन्होने हरि को हृदय से लगा लिया है वह गुरसिख गुरु जी के प्यारे हैं उन के यमदूत नजदीक भी नहीं आते। हरि का नाम ऐसा खजाना है जिसे कोई गुरमुख जानता है जिन को सतगुरु मिल जाते हैं वह रंग रलियां मानता है गुरु नानक जी

DATE

शब्द 64

साधो मन का मान तिआगो ।
काम क्रोध संगत दुरजन की ।।
तां ते अहनिस भागो ।
सुख दुख दोनों सम कर जानै ।
और मान अपमाना ।।
हरख सोग ते रहै अतीता
तिन जग तत् पछाना ।।
उसतत् निंदा दोऊ तिआगै
खोजहि पद निरबाणा ।
जन नानक इह खेल कठिन है
किनहु गुरमुख जाना ।

राधे जी राम राम

श्री राम

शब्द 64

भावार्थ ।

हे साधो! आप मन का मन त्याग दो। काम क्रोध दुरजनों की संगत त्याग दो इन से दूर रहे। सुख दुख मान अपमान सब समझ समझो। जो हर्ष शोक से अतीत (दूर) रहते हैं वह संसार को पहचान लेते हैं। अस्तुति निंदा दोनों को समान समझ कर त्याग देते हैं। निरवाण पद की खोज मे रहते हैं, यह खेल बहुत कठिन है इसे कोई गुरुमुख जानता है।

राम जी राम राम

शबद 65

गुरु का शबद रखवारै जीअ नालै
जल नही डूबै तसकर नही लेवै
भा न सागै जालै ॥
सिमरउ सिमर सिमर सुख पावहु
साथ साथ लरगालै।
इह लोक परलोक संग सहाई
जत कत मोहि रखवाले ॥
निरधन को धन, अंधुले को टिक
मात दूध जैसे बाले।
सागर मेह बोहिथ पाइओ हरि नानक
करी किरपा किरपाले ॥

राजा ध्यान राय
श्री राम

DATE

शबद 65

भावार्थ।

श्री गुरु जी का शबद सदा मेरे हृदय में वसता है। इसे जल डुबा नहीं ले सकता, चोर ले नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती। इस का हर समय सिमरण करो, सुखी रहो। सास सास इस का ध्यान रखो। यह जहां कहां लोक परलोक संग सहाई है, जहां कहां सब जगह रक्षा करता है। जैसे निर्धन को धन अन्धे को सहारा, माता का दूध बच्चे को। संसार रूपी सागर में जहाज है। हे प्रभो! कृपा करो, मेरे कृपालु प्रभो।

राम जी राम राम

शबद 66

गली जोग न होई

एक दृसटि कर समसरि जाणै॥

जोगी कहीऐ सोई।

जोग न खिंथा जोग न डंडै जोग न भसम चड़ाईऐ।

जोग न मुंदी मूंड मुडाइऐ जोग न सिंगी वाईऐ॥

अंजन मांहि निरंजन रहीऐ, जोग जुगति इव पाईऐ

जोग न बाहर मड़ी मसाणी. जोग न ताड़ी लाईऐ

जोग न देस दिसंतर भविऐ. जोग न तीरथ नाईऐ

अंजन मांहि निरंजन रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ॥

सतगुर भेटे ता सहसा तूटै. धावत वरजि रहाईऐ

निझर झरै सहज धुनि लागै, घर ही परचा पाईऐ

अंजन मांहि निरंजन रहीऐ

जोग जुगति इव पाईऐ"

नानक जीवतिआ मर रहीऐ

ऐसा जोग कमाईऐ, वाजे बाझो सिंङी वाजै

तउ निरभउ पद पाईऐ. अंजन —

DATE

शबद 66

भावार्थ।

खाली बातों से जोग नहीं होता, जब तक हमारी समझ नहीं होती। सतभाव होना ही जोग है। न भस्म चढ़ाने से, न डंडा पात रखने से, न विभूत से जोग होता है। न मूंड मूडने से न सिद्ध वादन करने से जोग होता है। संसार के अज्ञान कोम धून। ऐसा जोग जागृति से मिलता है। बाहर के सरायों मकानों में जाने से, ताड़ी लाने से जोग नहीं होता, न तीर्थ नहाने से न देवों देवतों में घूमने से जोग होता है। सतगुरु मिलने से, मन को रोकने से, सहज अवस्था होने से, अपने घर में ही साधना करने से, अंजन में निरंजन रहकर ही जोग होता है। जाति जी महाराज ऐसा जोग प्राप्त करता है। अन्दर अनहद नाद सुनने से निरभऊ पद की प्राप्ती होती है।

रामजी राम राम

DATE

शबद 67

मोहन मोहि लिआ मन मेरा

समझस शबद विचारे।

पूरन ब्रहम जोति परमेसर

प्रीतम प्रान हमारे ॥

अपने ठाकुर की हउ चेरी

चरण गहे जगजीवन प्रभ के

हउमै मार निवेरी

मनमुख हीन होछी मत झूठी

तन मन पीर सरीरे

जब की राम रंगीले राती।

राम जपत मन धीरे ॥

हउमै छोड़ भई बैरागनि - तब साची सुरत समानी॥

अकुल निरंजन सिउ मन मानिआ

बिसरी लाज लुकानी।

मूर भविख नाही तुम जैसे मेरे प्रीतम प्रान आधार

हरि के नाम रती सोहागन, नानक राम भतार।

शब्द 67

मोहन ने मेरा मन अपने वस कर लिया है। प्रीतम प्राण अबाध
हमारे में, जो कि पूरन ज्योति परमेसर अहंमे अबद्द
का विचार दिया है। मैं अपने ठाकुर जी की दासी हूँ
जाजीवन के चरण पकड़ने से, मेरी सारी अहंता
ममता खत्म हो गई है। मनमुख की मत छोड़ दी
झूठी है। तन मन में पीड़ा है। जब से राम जी के
रंग में रंग गई, राम नाम जपने से मन को धीरज
मिला। अहंता छोड़कर बैरागिन हो गई। सुरति
सच में समा गई। अब मन अकुल निरंजन से मान
गया है, सब लोकाचार बिसर गई। हे मेरे प्रीतम
प्राण आधार। भूत में भविष्य में आप जैसा कोई
नहीं राम जी मेरे पति हैं। मैं अब उनके रंग में
रंग गई हूँ। अब मैं सौहागन हूँ।

राम जी राम राम।

classmate

शबद 68

हरि प्रभ मेरे बाबला, हरि देवहु दान मै दाजो॥
हरि कपड़ो. हरि सोभा देवहु जित सवैर मेरा काजो॥
हरि हरि भगति काज सुहेला॥ गुर सतगुर दान दिवाया/
खंडे वरभंडे हरि शोभा होई, इह धौ.दान न रलै रलाइआ
होरि मनमुख दाज जे रख दिखाले /
सो कूड़ अहंकार कच पाजो ॥
हरि प्रभ मेरे बाबुला, हरि देवहु दान मै
दजो /

राम जी राम राम
श्रीराम

DATE

शब्द 68

भावार्थ।

हरि जी मेरे पिता हैं। हे हरिजी! आप मुझे दान में दाज देवो। आप कपड़े दो जिससे मेरी शोभा हो और मेरा कारज भी सारा ठीक हो जाये। हरि नाम की भगति आसान काम है। सतगुरु ने मुझे दान दिया है। यह दान संसार से नहीं मिल सकता। मनमुख यह दान रख कर दिखा भी दे तो यह झूठ दान है, इससे कूड़ अहंकार होता है। हे मेरे हरि पिताजी! आप मुझे दान में दाज दीजिए।

राजजीराम राम

DATE

शबद 69

सुणा सखिए मेरी नींद भली ।
मै आपनड़ा पिर मिलिआ ।
सखी नाल बसांह. अपने नाह पिआर
मेरी मन तन हरि संग हिलिआ ॥
भरम खोइओ शांत सहज सुआमी ।
प्रगास भइआ कौल खिलिआ ॥
वर पाइआ प्रभ अन्तरजामी ।
नानक सोहाग न टलिआ ॥

रामजी रामराम

श्रीराम

शबद 69

भावार्थ।

हे सखी सुनो। मेरी नींद भी अच्छी है जिसमें मुझे अपनी आत्मा का पति मिला। हे सखी! मैं सदा अपने पति के साथ रहूं। उनके संग मेरा मन तन खिल गया है। अब उन्होंने मेरे सारे भरम खत्म कर दिये हैं। सहज अवस्था और शान्ति प्राप्त हो गई है। अन्दर प्रकाश हो गया है और कमल खिल गया है।
अब मैंने अन्तरयामी वर प्राप्त कर लिया है यह मेरा सौहाग अब नहीं मिट सकता।
नानक जी।

रामजीराम राम

शबद 70

तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी।
कोइकिल कोकिला तरहौं जवानी॥
तरला जुआणी आप भाणी।
इछ मन की पूरीए॥
सारंग जियों पग धरै ठिम ठिम।
आप आप संधूरिए, स्रीरग राती फिरै माती
उदक गंगा वाणी।
बिनवंत नानक दास हरि का
तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी॥

राम जी राम राम
श्रीराम

141 DATE 1 1 2 2010

शबद 70

भावार्थ

हे प्रभो! आपकी सुन्दर चाल है वाणी मीठी है। आप कोकिल। कोकिला जैसे अभी जवान हो। यह तरल जवानी आपको भाती है, सारी मन की इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। आप सारंग जैसे चरण। छिप छिप कर बैर के खाते हो। आप तो रंग मे रंगे रहते हो। श्री रंग के रंग में रंगा है। मस्ती मे रहती है। गंगा जल जैसी पवित्र हो। नानक जी फरमाते हैं! मै हरि का दास हूं। आपकी सुन्दर चाल है और मीठी वाणी है।

राम जी राम राम।

classmate PAGE

शबद ७।

गुर बिन्न बिन्न प्रीति लगावहो मेरे हियरै।
मेरे प्रीतम नाम पराना।।
बिन नावै मर जारए मेरे ठाकुर।
जो अमली अमल लुभाना।।
हम बारिक कछु न जानह गति मति।
तेरे मूरख मुगध इआना।।
कर किरपा धार दीजै मत उत्तम।
कर लीजै मुगध सियाना।।
मेरा मन आलसीआ उघलाना।
हरि हर आन मिलाइओ गुर साधू।
मिल साधू कपट खुलाना।
जिन मन प्रीति लगी हरि केरी।।
तिन्ह धुर भाग पुराना।।
तिन्ह हम चरण सरेवह खिन्न खिन्न।
जिन्ह हरि मीठ लगाना।। हरि किरपा धारी मेरे ठाकुर
जन बिछुड़या चिर मिलाना।।

धन धन सतगुरु जिन नाम दृड़ाइआ।
जन नानक तिल कुरबाणा।
शबद 7। भावार्थ

हे सतगुरु। आप मेरे हृदय में दया दया प्रीतम की प्रीति लगा दो। आप मेरे प्रीतम हो प्राण हो। बिना नाम के मैं मर जाऊ जैसे अमली अमल के बिना मर जाते है। हम बालक मूरख मुगध है, इआणे, आपकी गति मति कुछ नही जानते। आप कृपा धारो हो उत्तम मति दो, इस मुगध को आप समझा कर दो, मेरा मन बड़ा आलसी है, हे सतगुरु साधु आप मुझे हर से मिला दो। जिन के मिलने से मेरे अन्दर के कपाट खुल जाये। जिन के मन मे प्रभु की प्रीति लग गई है उन के बड़े भाग्य है। उन चरणों हम दया दया चूमें जिन को नाम मीठा लगता है। हे हरि जी। आपने अपनी कृपा से यह बहुत देर का विछड़ा जन आप से मिल जाता है।

CLASSMATE
DATE PAGE

शबद 72

गुण गावत मनि हरिआ होवै ।
कथा सुनत मल सगली खोवै ॥
भेटत संग साध संतन कै ।
सदा जपो दइआला जीओ ॥
गुण सुण जीवां सोई तुम्हरी ।
ते प्रीतम ठाकुर अति भारी ॥
तुम्हरे करतब तुमही जाणहु ॥
तुम्हरी ओट जोवाला जीओ ॥
प्रभ अपना सास सास समारो ।
गुर मत गुर परसाद मन धारो ॥
तुम्हरी किरपा ते होय परगासा ।
सरब मइआ प्रतिपाला जीओ ॥
सत सत सत प्रभ सोई ।
सदा सदा सद आपे होई ॥
चलत तुम्हारे प्रगट पिआरे ।
देख नानक भये निहाला जीओ ॥

DATE

शबद 72

भावार्थ

प्रभु के गुण गाने से मन शान्त होता है। कथा सुनने से सब मैल खत्म हो जाती है। साध संतो के संग से सदा२ दयालजी का नाम जपो। आपके नाम की शोभा सुन२ कर जीते है। आप बड़भागी मेरे प्रीतम हो। आपके कर्तव्य आप ही जानते हो, हे गोपालजी। मुझे आप का ही आश्रय है। अपना प्रभु सास सास सिमरो। मंद गुमान धारणा करो। आपकी कृपा से अन्तर मे प्रकाश होगा। आप सब की प्रतिपालना करते हो। प्रभु हमेशा सत्य है। वह आप ही सत्य है। नानक जी फरमाते हैं, आप के चरित्र देख देख कर मै प्रसन्न होता हूँ

राम जी राम राम

DATE

शब्द 73

सतगुरु फरमाइआ कारी एह करेहो।
गुरुद्वारे होय कै साहिब संम्हालिहो॥
साहिब सदा हजूर है, भरमै के छोड़ कटकै।
अन्तर जोति धरेहो॥
हरि का नाम अमृत है दारू एह लाहेहो।
सतगुरु का भाणा चित राखहो संजम सचा नेहो॥
नानक ऐथै सुखै अन्दर राखसी।
अगै हरि जी सिउ केलि करेहो॥

राम जी राम राम

श्रीराम

शब्द 73

भावार्थ

सतगुरु जी ने फरमाइआ, यह काम करो? एकान्त में जाओ और अपने साहब की याद में रहो। साहब सदा अंग संग हैं, सार गरबह्म छोड़ दो। अन्तर में ज्योति जगाओ। हरी का नाम अमृत है यही दवाई लो, सतगुरु का हुक्म सदा चित में रखो, यही सच्चा संयम और प्यार है। नानक जी फरमाते हैं? यहां आप भावी रहोगे, आगे हरजी तुम्हारे साथ केलि कलोल करेंगे।

राम जी राम राम

DATE

शबद 74

हम वणजारे राम के, हरि वणज करावै दे रासि रे।

शाहि हमारा तूँ धणी जैसी तूँ रास दे

तैसी हम लेह।

हरिनाम वणजे रंग सिउं।

जे आप दइआल होय दे॥

लाहा हरि भगति धन खटिआ।

हरि सचे शाह मन भाणा॥

हरि जप हरि वखर लदिआ।

जम जागाती नेड़ न आइआ॥

हरि वणज करेह वापारिए।

अनन्त तरंगी दुख माइआ॥

ओई जेहे वणज हरि लाइआ फल तेहा तिन पाइआ।

हरि हरि वणज सो जन करे जिस क्रिपाल होई प्रभ दे

जन नानक शाहु हरि सेविआ फिर लेखा मूल न लेइ

राम जी राम राम

श्री राम

शब्द 74

भावार्थ

हमसब राम जी के व्यापारी हैं, हरि जी हमें सच्चा धन दे कर व्यापार करवाते हैं। आप हमारे शाहों के शहनशाह हैं। जैसा आप सच्चा धन देते हो वैसा ही हम लेते हैं। आप दलाल होते हो, तो हरिनाम का व्यापार करवाते हो। सच्चे धन का लाभ जब कमाया तो हरि जी को भा गया। सच्चा धन इकट्ठा कर लिया तो जम नेड़ नही आये। दूसरे जितने भी व्यापार हैं, व्यापारी करता है यह सब दुख देने वाली माया है। जैसा व्यापार करोगे वैसा ही फल मिलेगा। जिस पर प्रभु कृपा करते हैं वही हरिनाम का व्यापार करते हैं। महाराज जी फरमाते हैं, अगर हमने सच्चे शाहों के शहनशाह की सेवा कर ली तो फिर सब लेखे खत्म हो गए।

रामजीचमराय

शब्द 75

सेवक कीओट कनि नही प्रीत।

जीवत साहिब सेवे हो अपना।

चलते राखिओ चित ।।

मान मोह अरु लोभ विकारा बीओ चित ने चालिओ।

नाम रतन गुरा हरि बराज हलदवाबर ले चालिओ।

जैसी आगिआ कीन्ही ठाकुर तिस ते मुख नही मोरिओ।

सहज आनन्द रखिओ ग्रह भीतर उठ उहांओ को दोरिओ।

आगिआ मे भुख सोई कर सूखा सोग हर्ष नही जानिओ।

जो जो हुकम भइओ साहब को सो माथै लै मानिओ।।

भइओ किरपाल ठाकुर सेवक को सवरे हलत पलात।।

धन सेवक सफल ओहु आइआ जिनि नानक खसम पछाता।

राम जी राम राम

श्री राम

151

शब्द 75

भावार्थ

सेवक का प्यार अन्त तक निभ जाता है। जो कि जो वह अपने साहिब की सेवा करता है अन्त समय तक चित मे रखता है। मान मोह लोभ अहंकार वह चित्त मे नही रखता, नामरूपी रतन यह व्यापार ले कर जग से चला। जैसी आज्ञा प्रभु ने की उससे मुख नही मोड़ा। अन्तर मे सहज अवस्था कर ली और जगत से परलोक की ओर दौड़ पड़ा। प्रभु की आज्ञा मे दुख मे सुख माना शोक हर्ष समान जाना। जो जो हुक्म हुआ प्रभु का उसे सिर पर धारण किया। ठाकुर सेवक पर इस लोक मे परलोक मे कृपाल हो गये। जिन्होने संसार मे आ कर अपने पति परमात्मा को पहचान लिया वही धन्य सेवक है। नानकजी।

राम जी राम राम

शबद 26

सुरि।। विंनती सुआमी अपने नानक ईहै सुख माँग।

जंह कीरतन तेरा साधू गावै तंह मेरा मन लागै।

सुविर को पेखै सब सुखिया रोगी के मारो सिव रोगी।

करण करावनहार सुआमी आपन हथ संजोगी।।

मन मेरे जिन अपना भरम गवाता तिस के भारो कोय न भूला।

जिन सगलो ब्रहम पछाता ।।

संतजन जा का मन शीतल ओह जानै सगली ठांडी।

हौमैं रोग जा का मन व्यापत ओह जनम मरै बिललाती।।

ज्ञान अंजन जा की नेत्री परिआ तां को सरब प्रगासि।

अज्ञान अंधेरै सूझस नाही बहुड़ बहुड़ भरमाती

राम जी राम राम

जीराम

classmate

PAGE

153

DATE

शब्द 76

भावार्थ

सतगुरु नानक जी फरमाते है, हे प्रभो। मेरी बिनती सुनो। मै यही सुख मांगता हूं। जहां साधुजन कीर्तन करे वही मेरा मन लगे। सुखी को सब सुखी दिखते हैं रोगी को सब रोगी। करता स्वामी हर स्वामी तो प्रभु आप है। जिन्होने अपने सारे भरम दूर कर दिये हैं उन के हुक्म मे कोई नही भूलता। जिन्होने सर्वत्र ब्रह्म पहचान लिया है। संतो का मन सदा शीतल रहता है वह सब जगह शान्ति देते हैं। जिन मे हऊमै का रोग है जन्मते मरते दुखी रहते हैं। जिन के नेत्रों मे ज्ञान अंजन लग गया है उन्हे सभी ओर प्रकाश ही दिखता है। अज्ञान के अन्धेरे में कुछ नही पता लगता फिर फिर भरमों मे ही रहता है।

राम जी राम राम

शबद 77

वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीओ।
कवल नैन मधुर बैन। कोटि सैन संग सोभ
कहत मा जसोद जिसहि दही भात खाहि जीओ।
देखि रूप अति अनूप मोह महा मग भई।
किंकनि शबद झनतकार खेलि पाहि जीओ।।
काल कलम हुकम हाथ कहो कौन मेट सकई।।
ईस बम्य ज्ञान धिआन धरत हीए चाहि जीओ।
सत साच श्री निवास आदि पुरख सदा तूही।।
वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीओ।
राम नाम परम धाम सुध बुध निरीकार
बेसुमार सरबर कउ
सुथर चित भगत हित भेख धरिओ। कोइ जीओ।
हरिनाकस हरिओ नख बिदार जीओ।।
संख चक्र गदा पदम, आप आपि कीओ छदम।
अपरंपर पारब्रहम लखै कौन ताहि जीओ।
सति साच श्री निवास आदि पुरख सदा तूही
वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीओ

DATE

शब्द 77

भावार्थ

महाराज जी श्री कृष्णा जी की महिमा गा रहे हैं। आप का नाम बाहिग्रह है जी। आप के कमल जैसे नयन मीठी वाणी। वही बात रखाओ जी। आप का रूप देख कर मै मस्त हो गई, जब खेलते हैं तो पांव में नुपुर बजते हैं, जो प्रभु जी की कलम से लिखा है वह नहीं मिट सकता। हृदय में ईश्वर का ध्यान ज्ञान चाहिए जी। आप ही सत सजा श्रीनिवास हैं। आदि पुरख जी आप हो। बाहिग्रह बाहिग्रह बाहिग्रह जी रमन मन परम धाम है, सुधि बुद्धि निरंकार बेशुमार हो जी आप तो स्थिर हो परन्तु भक्तों के लिए शरीर धारण करते हो। श्रीनिवास को नाम लेही विदार दिओ जी शंख चक्र गदा पदम आपने धारण किए। आप अपरम्पार पारब्रह्म आप को कोई नहीं देख सकता। सत साच सदा श्रीनिवास आदि पुरख हो आप जी बाहिग्रह बाहिग्रह 2

classmate

राम जी राम राम

DATE

शब्द 78

सतगुर मूरत को बलि जाऊ।
अन्तर पिआस चात्रिक जिउ जल की।।
सफल दरसन कद पांऊ।
अनाथह को नाथ सरब प्रतिपालक।
भगत वच्छल हरि नाऊं।।
जा को कोई न राखै प्राणी।
तिस तूँ देह असराओ।।
निधरिआ धर निगतिआं गत।
निथविआं तूँ थाओ।।
दह दिस जाऊँ तहा तूँ संगै।
तेरी कीरति करम कमाऊ।।
एकस ते लाख लाख ते एका तेरी गति मिति कहि न सकाऊ।
तू बेअंत तेरी मीति नही पाइए।
सभ तेरो खेल दिखाऊ।।
साधन का संग साध सिउ गोष्ट, हरि साधन सिउ
जन नानक पाइआ है गुरमत हरि देहो दरस मन चाऊ।

157

DATE

शब्द 78

अपने सतगुरु जी की सूरत पर बलिहार जाते है जी
(गार्दीम)

अन्तर मे दरसन की प्यास है कब सफल दरसन पाऊं

अनाथों के नाथ हो, सर्व प्रतिपालक हो, आप का

नाम भक्त वत्सल है। जिस को कोई नही राखता उसे

आप आश्रय देते हो। निघरिआ के घर हो निगतिआं

की आप गति हो, निथावीआ का तू स्थान है। दशों

दिशाओं मे आप अंग संग हो। आप की कीरत गाऊं।

एक से लाख, लाख से एक कर देते हो। आप की

कीमत हम नही कह सकते। आप बेअंत हो, आप की

गति नही सब आप का ही खेल है। संतो का संग

सतंन से गोष्ट, सतंन से ही मेरी लिव लगी रहे।

महराज फरमा रहे है कि अब मैने गुरमत पा ली

है। अब गुण दरशन का मन मे चाव दे दो।

राम जी राम राम

classmate

PAGE

शबद

बाणै बनिहारनै लाव बारआ।

नामौ हो नाम साहिब को प्राण आधार॥

करन करावन तूँ ही एक जीअ जंत की तू ही टेक॥

राज जोबन प्रभ तूँ धणी तूं निर्गुण तूं सरगुणी॥

इहां उहां तुम रखै गुरु किरपा ते जैको लखै॥

अन्तरजामी प्रभ सुजान

नानक न किआ तू ही तारा

राम जी राम राम

आशिक

शब्द 79

भावार्थ

आपपर लाख बार बलिहार जाते हैं, बाबा मेरा तो नाम ही प्राण आधार है। करन करावन सब आप हो सब जीवों जंतो का आश्रय केवल आप हो। आप ही राज, जोबन, धरणी, निर्गुण सरगुण सब आप ही हो। यहां वहां सब जगह आप ही रक्षा करते हो। गुरु जी की कृपा से कोई ही देख सकता है। आप अन्तरयामी हो, सुजान हो। नानक जी फरमा रहे हैं आप ही मेरा बल हो।

राम जी राम राम

शबद 80

तुध भावै तो बखस लै खोटे संग खरे।
नानक भावै पारब्रह्म पाहन नीर तरे॥
लूणहरामी गुनाहगार बेगाना अल्प मत।
जीओ पिंड जिन सुख दीए ताहि न जानत तत
लाहा माइआ कारनै दह दिस ढूढन जाही।
देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि वसाइ।
लालच झूठ विकार मोह इहं संपै मनै माहि।
लम्पट चोर निंदक महा तिन्हु संग बिहाइ

राम जी एक राम

श्रीराम

classmate

PAGE

161

DATE

शब्द 80

गाविंद

आपको भा जाये तो आप मुझ बख्श लो, बिरे

औरवे के संग से तर जायें आपको भा जाये तो,

पानी में पत्थर भी तर जाये। लूणहरामी

गुनाहगार, बेगाना, अल्प मति, जिन्होने जीऊ

पिंड सब सुख दिए उस का तत् नही जानते

माया के लाभ कारण दहँ दिशा ढूंढने जाता है

देनेवाले दातार को निमिष मात्र भी मन में

नही बसाता। लालच झूठ विकार मोह इन्हो को

मन मे राखा हुआ है। लम्पट चोर निंदक मंह

उन के संग रहता है।

राधाजी राम राम

classmate

PAGE

शबद 8।

तुम्ह मिलते मेरा मन जीउ तुम्ह मिलहो दइआल।
निसि बासुर मन अनंद होत चितवत किरपाल॥
टहल करहु तेरे दास की, पग झारउ बाल
मसतक अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल॥
जगत उधारण साध प्रभ तिन्ह लागहु पाल॥
मो को दीजै दान प्रभ संतन पग राल॥
उकति सिआणप किछु नही नाही किछु घाल।
भ्रम भै राखहु मोह ते काटहु जम जाल॥
बिनउ करउ करणापते पिता प्रतिपाल।
गुण गावउ तेरे साध संग नानक सुख साल॥

राम जी राम राम

शब्द 81

गावीय

हे प्रभो! आप मिलने हो तो मेरा मन जी उठता है।
हे दयाल जी! आप मुझे मिलहो। रात दिन आप के
लाइने देख देख कर मन आनन्द होता है। आप के
दासों की छोटी छोटी सेवा करूँ, बालों से आप के
चरण झाडूँ। अपना मस्तक आपको समर्पण कर दूँ
आपके रवैल्ले गुणानुवाद सुनुँ। आप संसार जीवों
के उद्धारण हेतु संसार में आये हो। मैं भी आप की
लाइन में लगी रहूँ। हे प्रभु! मुझे सतो की चरण
रज दीजिए। मेरे में कोई भी सियाणप नहीं है
न कुछ मेहनत की है। मेरी करमों से भय से रहा
करो, मेरे जम के जाल सब काट दो। हे करुणापते
पिता किरपाल मेरी विनती सुनो। नानक जी
फरमाते है! संतो के संग बैठ बैठ कर आप
के गुण गाता रहूँ।

राम जी राम राम

DATE

शब्द 82

तिन्ह करी सोभा किआ गणा जिन्ह हरि हरि लदा
साधासरनी जो पवै सो छूटे बधा॥
गुण गावै अविनासीहं जोनि कै गरभ न दधा
गुर भेटिआ पारब्रहम हरि पढ़ बुझ समधा॥
नानक पाइआ सो धणी हरि अगम अगाधा॥

राम जी राम राम
श्री राम

165

DATE

शब्द 82

भावार्थ

जिन्होंने सच्चा धन इकट्ठा कर लिया है उन की शोभा नहीं कही जा सकती। जो संतों की शरण में पड़ जाते हैं वह बन्धनों से छूट जाते हैं। जो अविनाशी प्रभु के गुण गाते रहते हैं, वह मैं गरभ की अग्नि मे नहीं जलते। सतगुरु के प्राप्त हो जाने पर पारब्रह्म हरि को पढ़कर बूझ कर मग्न हो जाता है। नानक जी फरमाते है, फिर वह धरणी, हरि अगम आधार को प्राप्त कर लेता है।

राम जी राम राम

classmate PAGE

DATE

शब्द 83

सतगुरु पिछै भज पवैह एहा करणी सार।
सतगुरु खोटिओ खरै करै शब्द सवारणहार।।
आपे कुदरति साज कै आपे करे विचार।
इक खोटे इक खरे आपे परखणहार।।
खरे खजानै पाइए खोटे सटीअहि बाहर वार।
खोटे सच्ची दरगाह सुटिअनि, किस आगै करहि पुकार।
सची दरगाह मतिअनु गुरु के प्रेम पिआर।।
गणत तिन्हा दी को क्या करे।
जो आप बख्शे करतार।।

राम जी राम राम

श्रीराम

DATE

शबद 83

भावार्थ

संसार में सब से ऊंची करामात यही है कि संतो के पीछे दौड़ो। सतगुरु शबद के द्वारा खोटे को भी खरा कर देते। आप ही प्रभु कुदरत बनाते हैं, आप ही उस पर विचार करते हैं। कोई खोटा है, कोई खरा है सब को आप ही प्रभु जान लेते हैं। खरे को अपने खजाने में रख लेते हैं खोटों को बाहर फेंक देते हैं। खोटों को सच्ची दरगाह से बाहर निकाल देते हैं। किस के आगे पुकार करें, जिन के मन गुरु के प्रति प्रेम पिआर है वह सच्ची दरगाह में माना जायेगा। जिन को प्रभु आप बख्श देते हैं उन की गिनती नहीं हो सकती।

राम जी राम राम

DATE

शबद 84

सतगुरु की वाणी सत सत कर जाणहो गुरसिखो।
हरि करता आप मुहहु कढाई
अनदिन नाम जपहु गुर सिखो हरि करता सतगुरु घरी वसाई॥
जिन को आप देवडिआई जगत भी आपे आणि
तिन्ह को पैरी पाई॥
डरिए तां जे किछु आप दू कीचै।
सभ करता अपनी कला वधाए॥
देखहो भाई एह अखाड़ा हरि प्रीतम सच्चे का
जिन आपणै जोर सभ आणि निवाए॥
आपणिआ भगता की रख करे हर सुआमी
निंदका दुष्टां के मुह काले कराए॥
सतगुर की वडिआई नित चड़ै सवाई॥
हरि कीरति भगति नित आप कराए।
गुरसिखां के मुह उजले करे हर पिआरा॥
गुरु का जैकार संसार सबद करसे
जन नानक हरि का दास है हरि दासन की हरि

पेज २।४।२

117

DATE

शब्द 84

भावार्थ

हे गुरसिखो! सतगुरु की बाणी को सदा सच सच कर जानो, वह जो बोलते है उन मे सतगुरु ही बोलते हैं, दिन रात नाम जपहो गुरसिखो! हरि कर्ता सदा हमारे अन्तर मे ही बसते हैं। जिन्हें आप बड़ाई देते हो, सारा जगत उन के चरणों में आन पड़ता है। हमें डरें तब जब हम सिद्ध करें। सब कर्ता ही अपनी कला के द्वारा कर रहे हैं। हे भाई सुन यह संसार सच्चे प्रीतम का अखाड़ा है, जो अपने बल से सारे संसार को अपने चरणों मे झुका लेता है। अपने भक्तों की तो प्रभु रक्षा करते हैं, निंदकों दुष्टों के मुंह काले कर देते हैं। सतगुरु की बड़ाई दिन प्रतिदिन बढ़ती ही रहती है। हरि भक्ति हरि कीर्तन प्रभु आप ही करवा लेते हैं। गुरसिखों के हरि पिआरा मुख उजला करते हैं। शब्द से गुरु का जयकारा होता है। नानक जी कहते है मैं तो हरि का दास हूं दासों की लाज सदा प्रभु रखते हैं

शबद 85

सो सतगुरु पिआरा मेरै नाल है।
जिथहि किथहि मैनू लहहि छडाई॥
तिस गुर को हउ वारीआं जिन्ह हरि की हरि कथा सुणाई॥
तिस गुर को सद बलिहारणै॥
जिन्ह हरि सेवा भगति बणाई॥
तिस गुर को शाबाश है।
जिन्ह हरि सोझी पाई॥
नानक गुर विटहु वारीआं।
जिन्ह हरि नाम दीआ॥
मेरे मन की आस पुराई॥

राम जी रामराम
श्रीराम

शब्द 85

भावार्थ /

मेरा पिआरा सतगुरु मेरे साथ है वह जहां कहां
भी रक्षा करते हैं। उन गुरु पर बलिहार जाते हैं जो
मुझे हरि की कथा सुनाते हैं। उन सतगुरु पर हम
बलिहार जाते हैं जिन्हो ने अपनी सेवा पहले
आप बनाई हैं। ऐसे गुरु पर बलिहार हैं जिन्होने
सेवा की करामात बना दी है। ऐसे सतगुरु पर
बलिहार हैं, शाबाश है। जिन्होने मुझे हरि की
सोझी पाई है। नानक जी कह रहे हैं उन सतगुरु
पर मैं बलिहार जाता हूँ जिन्होने मुझे हरि नाम
दे कर सारी आशाएं पूरी कर दी हैं /

रामजीरामराम

classmate

DATE

शबद 86

तेरा एको नाम मजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला।
जप तप का बांध बेड़ुला जित लंघे वहेला ॥
न सरवर न ऊछलै ऐसा पंथ सुहेला।
साजन चले पिआरिआ किऊ मेला होई ॥
जे गुण होवहि गंठड़ीऐ मेलेगा सोई।
मिलिआ होइ न वीछुड़ै, जे मिलिआ होई।
आवागउण निवारिआ है साचा सोई ॥
हउमै मार निवारिआ सीता है चोला।
गुरबचनी फल पाइआ सह के अमृत बोला ॥
नानक कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा।
हम सह केरीआं दासीआं साचा खसम हमारा ॥

राम जी राम राम

श्री राम

15 · 2 · 2010

171

DATE

शब्द 86

भावार्थ

आप के एक पक्के रंग ने मेरा चोला पक्के रंग में रंगा दिया है। जपतप से इस बन्धन मे रख लिया है, न यह उछलता है, न यह सरकर है ऐसा आसान रास्ता है। साजन चल पड़े अब कैसे मेल होगा। अगर गंडरी मे गुरु होगा तो वह अपने आप मिला लेगें। एक बार मेल हो गया तो फिर न विछुड़ेगा। उस सच्चे प्रीतम मनमोहन ने मेरा आवागमन भी दूर कर दिआ। हउमैं सारी खत्म कर के यह चोला सीया है। गुरु जी के वचनों से फल प्राप्त कर लिया। अपने पति के अमृत बोल प्राप्त हुऐं। नानक जी फरमाते है मेरा शहो तो सच्चा है प्यारा है। हम सब उन की सहेलियां है दासिया है, वह हमारा सच्चा मालक है

स्वामी जी राम राम

classmate

PAGE

DATE

शब्द 87

सखी मिलहु रस मंगल गावहो।
हम घरि साजन आइआ॥
आवहु मीत पिआरे।
मंगल गावहो नारे॥
सच मंगल गावहो तौं प्रभ भावहो।
सुहेलड़ा जुग चारे॥
अपने घर आइआ थान सुहाइआ।
कारज शबद सवारे॥
ज्ञान महारस नेत्री अंजन त्रिभवण रूप दिखाया॥

राम जी राम राम
श्रीराम

DATE

शबद 87

भावार्थ

आओ सखियो! हम सब मिल कर अपने साजन के मंगल गायें, आज वह हमारे घर आये हैं। आओ सारे मीत पिआरे, हम सब मिल मंगल गावें। उन के सम्भ मंगल गाओगे तो प्रभु को भा जाओगे। जुग चारे सुहेलड़े गाओ, प्रभु अपने घर आये हैं तो सारा स्थान सुन्दर हो गया है, सारे काज शबद ने पूरे कर दिये हैं। ज्ञान का रस नेत्रों में अंजन दे सतगुरु जी ने त्रिभवण रूप दिखा दिया है।

राधाजी रामराय

DATE

शब्द 88

नाराइन नरपति नमस्कारे।
ऐसे गुरु को बलि बलि जाइए॥
आप मुक्त मोहि तारे।
कवन कवन कवन गुन कहिए।
अंत नही कछु पारे॥
लाख लाख लाख कई कोरै।
को है ऐसो बिचारै॥
बिसम बिसम बिसम ही भई है।
लाल गुलाल रंगारे॥
कहु नानक संतन रस आई है।
जिउ चाखि गूंगा मुसकारै॥

राम जी राम राम
श्रीराम

DATE

शब्द ४८

भावार्थ।

जो नाराइन सारे नरों के पति है उन्हें मेरी नमस्कार है, शेष नाग को बलिहारी जाते हैं, जो मुक्त है और मुझे भी तार रहे हैं। आप के कितने कितने गुण हैं, इन का तो अन्त पारावार ही नहीं है। कितने लाख करोड़ कौन ऐसा विचार कर सकता है। विस्म हो गई अन्तर मे लाल गुलाल रंग लग गया है। नानक जी कह रहे हैं अब मुझे सन्तन के का रस आ गया है। जिस का स्वाद मैं गूंगे की तरह वरणन नहीं कर सकता केवल मुस्कराता हूं।

राम जी राम राम

classmate

शब्द 89

मेरे लालन की सोभा।
सद नवतन मन रंगी सोभा॥
ब्रहम महेस सिद्ध मुनी इन्द्रा।
भगति दान जस मंगी॥
जोग ग्यान ध्यान सेख नागे।
सगल जपहि तरंगी॥
कहो नानक संतन बलिहारै।
जो प्रभ के सद संगी॥

राम जी राम राम
श्रीराम

177

DATE

शब्द 89

व्याख्या

मेरे ठाकुर की शोभा सदा अति सुन्दर है। यह सदा नवतन रहती है, मन को शोभायमान करती है। प्रभु से सब ब्रह्म महेश सिद्ध मुनि इन्द्र, भक्ति दान का यश मांगते हैं। जोग ज्ञान ध्यान सब शेष नाग सब तपी जाप करते हैं। नानक जी फरमाते हैं, मैं उन संतन के सदा बलिहार जाता हूं जो सदा प्रभु के सद संगी हैं।

राम जी राम राम

DATE

शबद 90

जिन कउ लगी पिआस।
अमृत सेइ खांहि॥
कलि मांहि एहो पुनः।
गुण गोविन्द गांहि॥
तिथै तूं समरथ जिथै कोई नांही।
ओथै तेरी राव अगनि उदर मांहि॥
सुण कै जम के दूत नाइ तेरै छडि जांहि।
भउ जल बिखम असगाहि गुर सबदी पारि पाहि॥
सभसै नो किरपालु सम्हाले साहि साहि।
बिरथा कोई न जाइ जि आवै तुध आहि॥

राम जी राम राम
श्री राम

DATE

शब्द १०

भावार्थ।

जिन की आत्मा को सच्ची प्यास लगी है, वही अमृत खाते हैं, कलियुग में धन से बड़ा पुण्य है, गोविन्द के गुण गाना। जहां कोई नही है प्रभो। आप वहां समर्थ हो। अन्दर माता के पेट में अग्नि में भी आप रक्षा करते हो। आप का नाम सुन के सारे यम दूत भाग जाते हैं। गुरु के अपार शब्द से यह विषम भवसागर से भी पार हो जाते हैं। मेरे प्रभो तो सब पर कृपा करते हैं। स्वास स्वास सब की सम्भाल करते हैं। जो भी आप के द्वारे आते हैं, कभी खाली नही जाते।

रामजी राम राम

DATE

शब्द 91

हरि कीरतन सुणै। हरि कीरतन गावै।
तिस जन दुख निकट नहि आवै ॥
जा कउ अपनी किरपा धारै।
सो जन रसना नाम उचारै ॥
हरि बिसरत सहसा दुख बिआपै।
सिमरत नाम भरम भउ भागै ॥
हरि की टहल करत जन सोहै।
ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥
मन तन मुख हरि नाम दइआल।
नानक तजीअले अवर जंजाल ॥

राम जी राम राम
श्री राम

DATE

शबद ९१

जो हरि कीरतन सुनता है, हरि कीरतन गाता है (भावार्थ)
उसे कभी दुख निकट नहीं आता। जिस पर प्रभु अपनी
कृपा धार कर रखते हैं, वही रसना से हरि नाम
उच्चारण करता है। हरि का नाम भूलने से रक्त
भ्रम सदा दुख व्याप जाता है और हरि नाम सिमरन
से सारे भ्रम भय भाग जाते हैं। जो हरि की थोड़ी
थोड़ी टहल करते हैं वही शोभायमान हो जाते हैं
उसे माया रूपी अग्नि छू भी नहीं सकती। मन में
तन में मुख में हरि नाम दृढ़ाल दो, और सारे जंजाल
छोड़ दो (गुरु नानक जी)

राम जी राम रक्षा

classmate PAGE

DATE

शबद 92

अनद भइआ निकसी सब पीरा।
सगल बिनासे दरदा जीओ॥
प्रभ किरपा ते हरि हरि धिआवहे।
प्रभ दइआ ते मंगल गावहे॥
ऊठत बैठत सोवत जागत।
हरि धिआइऐ सगल अवरदा जीओ॥
नाम अउखध मो को साधू दीआ।
किलबिख काटे निरमल थीआ॥
जिस का अंग करे मेरा पिआरा।
सो मुकता सागर संसारा॥
सत करै जिन गुर पछाता।
सो काहे को डरदा जीओ॥
जब ते साधू संगत पाये।
गुर भेटत हउ गई बलाये॥
सासि सासि हरि गावै नानक सतगुर ढाक लीआ मेरा परदा जीओ।

classmate

183

DATE

शब्द 92

भावार्थ।

सदा मन में आनन्द हो गया जब पीड़ा निकल गई सारे दरद नाश हो गए। प्रभु कृपा करें तो हम हरि का ध्यान करें, प्रभु दया करें तो हम सब मंगल गावें, उठते बैठते सोते जागते, हरि का ध्यान सारी उमर भर करें। मुझे साधू ने (सतगुरु ने) नाम रूपी औषध दी, उससे मेरे सारे पाप कट गये निर्मल हो गया। जिस की ओर मेरे प्रभु हो गये वह संसार में मुक्त हो गया। जिन्होंने गुरु को पहचान लिया है, वह सदा सब का सेवा करता है वह डरता नहीं है। जब से मैंने साधू संगत प्राप्त कर ली है गुरु जी के मिलने से मेरी सारी हौमै खत्म हो गई है। अब सास सास आप की यश गाते हैं। सतगुरु ने मेरा परदा ढाक लिया है।

राम जी राम राम

शब्द 93

विसमु भई मै बहु विधं सुनते।
कहो नो सोहाग्नि स्वहिओ॥
देहो सदेसरो कहिओ प्रिअ कहिओ।
को कहतो सब बाहर वाहर॥
को कहतो सभ मेहिओ।
बरनु न दीसै चिहन न लखिए॥
सोहागन सात भ्रमइओ।
सरब निवासी घट घट वासी।
लेप नही अलपइओ॥
नानक कहत सुनो रे लोगा
संत रसन को बसइओ॥

राम जी राम राम
श्रीराम

classmate

DATE

PAGE

DATE

शब्द 93

भावार्थ

मै बहुप्रकार से प्रभु की महिमा सुन सुनकर मस्त
हो गई। हे सोहागन आप बताओ! आप मेरे सहो को
मेरा संदेशा दे देना। कोई कहतो है प्रभो बाहर २
है कोई कहते है वह अन्दर अन्दर है। कोई कहते हैं
वह बन मे है। प्रभु का वरन नही दिखता
चिह्न नही पता लगता, सात सोहागनो आप
बताओ, । प्रभु तो घट घट वासी है वह
लेप हैं अलेप नही है। नानक जी फरमाते है
हे सारे संतो सुनो! वह तो संतो की रचना पर
बलते हैं।

रघ्घुवीरराम राम

DATE

शब्द ९५

ऐसो गुनु मेरो प्रभ जी कीन्ह।
पंच दोख अरु अहं रोग॥
एहै तन ते सगल दूर कीन्ह।
बंधन तोरि छोरि बिखिआ ते॥
गुर को शबद मेरै हिऔरै दीन।
रूप अनरूप मोरो कछु न बिचारिओ।
प्रेम गहिओ मोहि हरि रंग भीन॥
पेखिओ लालन पाट बीच खोये।
अनंद चिता हरखै पतीन॥
तिस ही को ग्रिह सोई प्रभ नानक।
सो ठाकुर तिस ही को धीन॥

राम जी राम राम
श्री राम

187

शबद 94

मेरे प्रभु जी ने ऐसा गुन कीआ है। भावार्थ।

पांच विकार और अहमता के रोग दूर कर दिये

सारे विषयों के बन्धनों से छुड़ा दिया गुरु का शब्द

मेरे हृदय मे दे दिया। मेरा रूप अनरूप कुछ नही

विचारिओ। उन्होंने मेरा रूप कुछ नही विचारिओ

मुझे प्रेम से पकड़ लिया, मुझे हरि रंग मे

पक्का रंग दिया। चित मैं हर्ष हो गया अर्थात

ललन को मैंने प्यार के बीच मे लपटा देखा।

नानक जी फरमाते हैं वह मेरे ठाकुर है

अब मैं उन्ही के आधीन हूं।

राम जी राम राम

DATE

शबद ९५

रैणा दिनस गुर चरणा आराधी।
दइआ करहो मेरे साई॥
जे गुर झिड़के तां मीठा लागै।
जे बख्शे तां गुर वडिआई॥
गुरमुख बोलहि सो थाइ पाए।
मनमुख किछु थाइ न पाई॥
पाला ककर बरफ वरसै।
गुरसिख गुर देखण जाही।
सभ दिनस रैणा देखा गुर अपना।
विच अखी गुर पैर धराई॥
अनेक उपाव करी गुर कारन।
गुर भावै सो थाइ पाई॥
नानक का जीउ पिंड गुरू है।
गुर मिल तृपति अघाई॥

राम जी राम राम

189

शब्द ९५
(भावार्थ)
हे मेरे साई मेरे पर विशेष दया करो कि मैं रात दिन आप के चरणों की आराधना करूं। अगर सतगुरु मुझे डांट दें तो मुझे मीठा लगे, अगर बख्श दे तो आप की बड़ाई है। जो गुरु मुख बोलता है वही ठीक हो जाता है। मनमुख का बोला हुआ किसी काम नहीं आता। चाहे कितनी सर्दी हो बर्फ पड़ रही हो फिर भी गुरु-सिख गुरु दर्शन को अवश्य जाता है। दिन रात गुरमुख अपने सतगुरु के दर्शन करता है। अपनी आंखों में गुरु जी के चरण धारण करता है। बहुत ही गुरसिख उपाय करता है। जो वह चाहता है वही देता है। नानक जी फरमाते हैं मेरा तो जोड़ पिता गुरु है। गुरु जैसा कोई सज्जन नहीं मिलता है।

DATE

शबद 96

सभि धन कहो गुरु सतगुरु गुरु सतिगुरु ।
जित मिल हरि परदा कजिआ ॥
पंचे शबद वजे मत गुरमत ।
वडभागी अनहद वजिआ ॥
आनन्द मूल राम सब देखिआ ।
गुर शब्दी गोविन्द गजिआ ॥
आदि जुगादि वेस हरि एको ।
मत गुरमत हरि प्रभ भजिआ ॥
हरि देवहु दान दइआल प्रभ ।
जन राखो हरि प्रभ लजिआ ॥

रामजी राम राम

91

DATE 26.7.2010

शबद 46

आवधि

ऐसे सतगुरु जी को सदा धन धन कहो

जिन्होने मिल कर गुरसिख का परदा

ढाक लिया। गुरमत हो गई तो पांचो

शबदों का मेल हो गया। वडभागी है वह

जो आनन्द बीज लेते हैं। व गुरशबद अव

गर्जना करता है। हरि जी का कोर्ट में जगा

मे एक ही वेष रहता है। गुरमत से प्रभु भजे

हैं। हे प्रभो! आप मेरी लाज रखना इस गरीब

के परदे ढक कर रखना।।

कृपाम

26.6.2010

मुन्दावणी
धीमरे ओल्हा रे नाम का।
अवर जे करन करावनो॥
तिह मे भउ है नाम का।
अवर जतन नहीं पाइए।
वड भाग हरि धिआइए॥
लाख हिकमति जानीए।
आगै तिल नहीं मानीए॥
अहम् बुद्धि करम कमावने।
गृह बालू नीर बहावने॥
प्रभ किरपाल किरपा करै
नाम नानक साधू संग मिलै॥

राम जी राम राम

classmate

PAGE

शबद ९७

| भावार्थ |

हे मेरे जीअड़े! तू सदा राम नाम का
आश्रय ले, शोक सब मै जम का डर है।
बड़े भाग्य हों तो हरि नाम की आराधना कर
जा सकती है। लाख हिकमत आ जायें, और
एक तिल भी नहीं मानी चै जायेगी। जो
सर अहम बुद्धि वाले हैं वह सब रेत की
तरह बह जाते हैं। प्रभु कृपालु आप
कृपा करें, तो संतो का संग मिलता है

श्रीराम

classmate

DATE

शब्द 98

जिउ जिउ तेरा हुक्म ।
तिवै तिउ होवणा ॥
जेह जेह रखैह आप तेह जाये खड़ोवणा ॥
नाम तेरे के रंग दुरमत धोवणा ।
जप जप तुध निरंकार भरम भउ खोवणा ।
जो तेरे रंग रते से जोनि न जोवणा ॥
अन्तर बाहर इक नैन अलोवणा ।
जिन्ही पछाता हुक्म ।
तिन्है कदे न रोवणा ॥
नाउ नानक बख्शीश ।
मन मांहि परोवणा ॥

राम जी राम राम

193

DATE

शब्द 98

(भावार्थ)

जैसी २ प्रभु की आज्ञा होगी वैसा ही होगा जहां २ आपने खड़ा कर देना है वहीं हो जाना है। आप के नाम से सारी उपाधि धो दी जाती हैं। आप के नाम का जाप कर कर के सब भरम भउ मिटा देते हैं। जो आप के रंग मे रंग गये हैं वह बार२ योनियों मे नहीं आयेगें। अन्दर बाहर ले एक ही नयन से देखते रहते हैं। जिन्होने सच को पहचान लिया है उन्होने कभी भी नहीं रोना। नाम की बख्शिश को मन मे पिरो कर रखना है।

रामजीरामराम

classmate

PAGE

शब्द 99

• जो प्रभ की हुकमु पछाणै सो सभ ते ऊचा।
सब किछु तेरा करता कादिर सेवरु सूचा॥
जीउ प्राण मेरा धन साहिब का मानिआ।
नाम जिसै कै उजली, तिसु दासी गनिआ
बेपरवाहु अनंदमय नाउ माणक हीरा।
रज्जी धाई सदा सुख, जो का तूँ मीरा।
सखी सहेली संग की सुमति दृड़ावहे।
सेवहो साधू भाउ कर तउ निधि हरि पावहे॥
सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा।
जिसहि सिंगारै नानका।
तिसु सुखहि बसेरा॥

राम जी राम राम

DATE

शबद ११

भावार्थ

जिस प्रभु की हम दासी हैं, वह सब से ऊंचा है। सब कुछ उन्हीं से होता है चाहे ज्यादा है या थोड़ा है। प्रभु मेरे जीवन प्राण और धन और साहिब हैं, उन के नाम मात्र से हम उजली हो जाती हैं। उन की हम दासी कहलाती हैं। वह सदा आनन्दमय है उन का नाम हीरा है। अगर आप मेरे मीत हैं तो मैं सन्तुष्ट रहती हूँ। हे सत्संगी सखियो सहेलियो मुझे सुमति दो। अपने सतगुरु को भाव से सेवा करूँ तब नवनिधियां प्राप्त करूँ। सब ठाकुर की गोपियां हैं और सब कहती हैं ठाकुर मेरा है, जिसे आप श्रृंगार देते हैं, वह सदा सुखी रहता है।

रामजीशरण

5.5.2010

19(

DATE

शबदा(छ)

हमरा मन मोहिओ गुर मोहन।
हम बिसम भई मुख लागे॥
टूटे माइआ के बंधन फाहे।
हरि राम नाम लिव लागे॥
सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे।
जो तुम्हरा जसु कहते गुरमत॥
तिन्ह मुख भाग सभागे॥
सगली रैणा सोई अंधियारी।
गुर किंचित किरपा जागे॥
जन नानक के प्रभ सुन्दर सुआमी।
मोहे तुम सर अवर न लागे॥

राम जी राम राम

classmate

97

DATE

शबद १००

भावार्थ

हमारा मन गुरु मोहन ने मोह लिया है। उनके मुख लगने से हम विलय हो गई। सब माया के बन्धन काटे दूर गये। अन्तर में राम नाम लगन लग गई है। हम अपने ठाकुर के सेवक बन गये, उन से मेरी लगन लग गई है। उन के मुख भाग्यवान हैं जो सदा ठाकुर के गुण गाते हैं। सारी अंधियारी रात बीत रही सतगुरु ने थोड़ी सी कृपा करी तो हम जाग गये। नानक जी फरमाते हैं हे मेरे स्वामी आप अति सुन्दर हो। आप जैसा मुझे कोई नहीं लगता।

राम जी राम राम

5-5-2010

शबद 101

इह चाल निराली गुरमुखी ।
गुर दीखिआ सुणि मन भिन्नै ॥
सा सेवा कीती सफल है ।
जित सत्गुरु का मन मन्नै ॥
जां सतगुरु का मन मनिआ ।
तां पाप कसमल भन्नै ॥
उपदेस जि दिता सतगुरु
सो सुणिआ सिखी कन्नै ॥
जिन सतगुरु का भाणा मंनिआ ।
तिन चड़ी चउगणा वन्नै ॥

राम जी राम राम

DATE

शब्द 10।

(भावार्थ)

गुरमुखों की चाल निराली होती है
उन की शिक्षा सुन कर मन खिल उठता है।
जिस मे सतगुरु का मन मान जाये वही सेवा
सफल है। सतगुरु जी का मन मान गया
तो घोर पाप खत्म हो गये। जो सतगुरु जी
ने उपदेश दिया वह मैंने अपने कानों से
सुना। जिन्होंने ने सतगुरु जी का हुक्म
मान लिया, उन की चढ़दी कलाओ में
उन्नति होती है।

राम जीरामराम

DATE

शबद 102

घालि खाये किछु हथों देइ।
नानक राह पछाणै सेइ॥
गिआन विहूणा गावै गीत।
भुखे मुलां घरे मसीत॥
मखटू होइ कै कंन पड़ाए।
फकर करे होर जाति गवाए॥
गुर पीर सदाए मंगण जाई।
तां के मूलि न लगीए पाई॥

राम जी राम राम

DATE

शबद १८२

(भावार्थ)

पहले आप मेहनत करके कमाई करे फिर अपने हाथों से दान दे, नानक जी फरमाते है। वही रास्ता प्राप्त कर सकते है ज्ञान के बिना गीत गाता है। मुल्ला कहलाता है तो उस के घर मे ही मसीत है। कानो को फाड़ कर मुद्रा डाल लेना। पाखंड करता है अपनी जात भी खो बैठता है। गुरु पीर कहलाता है, घर घर मांगने जाता है। उस के पांव बिल्कुल न लगो।

राम जी राम राम

DATE

शबद।103

बोलहु सच नाम करतार।
फुनि बहुड़ न आवन बार॥
ख्रिसरि विकारी बन्धन बांधै।
हउ तिस के बलि जाई॥
पाप पुराय की सार न जाणै।
भुल्ला फिरै अजाई॥
ऊचा ते फुनि नीच करत है।
नीच करै सुलतान॥
जिनि जाणा सुजाणि‌आ।
जग ते पूरे परवाणा॥
तां को समझावणा जाइए।
जे को भुल्ला होई॥
आपे खेल करै सभ करता।
ऐसा बूझै कोई॥
नाउ प्रभाते शबद धिआइए छोड़ो दुनी परीता।
प्रणवति नानक दासन दासा जग हारिआ तिन जीता

PAGE

103

DATE

शब्द 103

(अर्थ)

सदा सतनाम करतार का नाम बोलो फिर आवागमन खतम हो जायेगा / विकार वाली दृष्टि बन्धन मे बांध देती है / उन के हम बलिहार जाते है / वह पाप पुण्य को नही जानता / भूला फिरता रहता है / भगवान ऊंचों को नीच कर देते है फिर नीचों को ऊंचा कर देते है, जिन्होंने ने ऐसा जान लिया है वह खुशी पा जाता है / अगर कोई भूला हो तो उसे समझाने जाँये / यह सब खेल भगवान स्वयं कर रहे है, ऐसा कोई कोई जानता है / प्रभात समय उठकर शब्द का ध्यान कर दुनिया की प्रीति छोड़ दें नानक जी फरमाते है मे दासो का दास हूं मे संसार जीत लिया है /

DATE

शबद। ०५

भलो भलो रे कीरतनिआ ।

राम रमा रामा गुन गावहे ॥

छोड़ माइआ के धन्ध सुआउ ।

ओअंकार एक धुनि एकै ॥

एकै राग अलापै ।

एका देसी एक दिखावै ।

एको रहिआ व्यापै ॥

एका सुरत एका ही सेवा ।

एको गुर ते जापै ॥

पंच बजित्र कर संतोखा ।

सात सुर लै चालै ॥

बाजा माणा ताणा तज ताना ।

पाउ न बीगा धारै घालै ॥

फेरी फेर न होवहि कबही ।

एक शबद बधं पालै ॥

105

नारदी नरहर जाणा हदूरे।
घुंघर खड़कतिआण विसूरे॥
सहज आनन्द दिखावै भावै।
एह निरतकारी जनम न आवै॥
जे को अपने ठाकुर भावै।
कोटि मध एहो कीरतन गावै॥
साध संगत की जावहु टेक।
कहो नानक तिस कीरतन एक
राधाजीरामराम

classmate

शबद 105

आवहु भैणो गलि मिलह अंक सहेलिड़आह।
मिलि कै करें कहाणीआं समरथ कंत कीआ।
साचे साहिब सभि गुण अवगुण सभि असांह।
करता सभु को तेरै जोरि।
एकु शबदु विचारिऐ जा तूं ता किआ होरि॥
जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी।
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी॥
पिरु रीसालु ता मिलै जा गुर का शबदु सुणी।
केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति॥
केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति।
केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति॥
सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ।
सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ॥
नानक सचा पातिशाहु आपे लए मिलाइ।

राम जी राम राम

DATE

शब्द 105
(भावार्थ)

आओ गुरमुखो बहिनों आपस मे गले मिले हम सब अके सहेलिआं है। इकट्ठे मिल कर आनन्त की कहानियां करें। हे सच्चे साहिब आप मे सब गुण है और हमारे मे सब अवगुण है। हे कर्ता सब आप के बस मे है। एक शबद का विचार फिर और कुछ नही, सोहागिन आत्मा से पूछो आपने कैसे परमात्मा रुपी पति को वश मे किया। सहज सन्तोष और मीठा बोलने से। गुरु का शबद सुन कर खसम पिर मिलता है। कितनी आप की कुदरते है कितनी तेरी दातें है कितने जीअजंत आपकी दिन रात उसतत करते हैं। सच से सच उत्पन्न होता है फिर सच मे ही समा जाता है। सुरति चढ़ जाये तो गुरु वचनों से समझ मे आता है। सच्चा पातशाह आप ही मिला लेता (नानक जी)

शबद 106

अमृत वाणी हरि हरि तेरी सुणि सुणि होवै परम गति मेरी।
जलन बुझी शीतल होइ मनुआ।
सतगुर का दरसन पाइ जीओ॥
सूख भइआ दुख दूर पराना।
संत रसन हरि नाम वखाना॥
जल थल नीरि भरे सर सूभर।
बिरथा कोइ न जाइ जीओ॥
दइआ धारी तिन सिरजन हारे।
जी जंत सगले प्रतिपाले॥
मेहरवान किरपाल दइआला।
सगले त्रिपत अघाइ जीओ॥
वण त्रिण त्रिभवण कीतोन हरिआ।
करणहार खिन भीतर करिआ॥
गुरमुखि नानक तिसै आराधे।
मन की आस पुजाइ जीओ॥

DATE

शब्द 106
(भावार्थ)

हे प्रभु! आपकी अमृतवाणी सुन सुन कर मेरी परम गति होती है। मेरे मन की जलन बुझ जाती है और मेरा मन शीतल हो जाता है। सतगुरु का दर्शन पा कर। सब सुख ही सुख हो जाता है और दुख भाग जाते हैं। संतों के द्वारा जब नाम जपते हैं। सब तालाब जल थल भ पानी से भरपूर हो जाते हैं, कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता, सिरजनहार ने अपनी दया करदी, सब जीव जंतों की प्रतिपालन स्वयं करते हैं। प्रभु मेहरबान हैं कृपालु हैं सब उनसे तृप्त हो जाते हैं। सारा वन तृण हरा कर दिया, करतार ने यह सब एक क्षण में ही कर दिया, गुरमुख केवल इन्हीं की आराधना करता है, सब मन की आशाएं पूरी हो जाती हैं।

राम जी राम राम

X10

DATE

शबद107

वडेवडे जो दीसंहि लोग ।

तिन को व्यापै चिंता रोग ॥

कउन वडा ? माइआ वडआई ? ।

सोई वडा जिन्ह राम लिव लाई ॥

भूमिआ भूमि ऊपर नित लूझै ।

छोड़ चलै तृशना नही बूझै ॥

कहो नानक इह तत विचारा ।

विन हरि भजन नाही छुटकारा

रामजीरामराम

XII

शब्द 107 (भावार्थ)

संसार में जो भी धनी लोग दिखते है। इन सब को चिंता रोग लगा है। कौन बड़ा है। क्या माया बड़ाई है? नही, वही बड़ा है जिसने राम जी से लगन लगा ली है। बड़े २ पृथ्वी के मालिक पृथ्वी पर के लिए ही लड़ते रहते है, सब यही छोड़ जाते है, तृष्णा नही बुझती। नानक जी तत्व बतलाते है। बिना भजन के छुटकारा नही मिल सकता।

राम जी राम राम

classmate

PAGE

शबद १०८

तुम कहिअत हो जगत गुर सुआमी।
हम कहिअत कलजुग के कामी॥
नाथ कछु न जानउ।
मनु माइआ के हाथ बिकानउ॥
इन्ह पंचन मेरो मनु जो बिगारिओ।
पलु पलु हरि जी ते अंतर पारिओ॥
जत देखउ तत दुख की रासी।
अजौं न पत्याइ निगम भए साखी॥
गोतम नारि उमापति सुआमी।
सीसु धरनि सहस भग गामी॥
इन्ह दूतन खलु बधु करि मारिओ।
मैं बडो निलाजु अजहू नही हारिओ।
कहि रविदास कहा कैसे कीजै।
बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै॥

राम जी राम राम

शबद 108 (भावार्थ)

आप तो जगत गुरु स्वामी हो और हम कलियुग के कामी हैं, हे नाथ! हम कुछ नहीं जानते, मन माया के हाथ बिक गया है। इन पांच विकारों ने मेरे मन को बिगाड़ दिया है। पल पल हरि जी से अन्तर डाल दिया। जहां देखता हूं दुख ही दुख है। सारे वेद पुराण साक्षी हैं। गौतम की नारी उमापति महादेव। जिन्होंने अपने शीश पर धरती उठाई हुई है। इन पांच विकारों ने मुझे खूब मारा पर मैं इतना निर्लज्ज हूं कि हारा नहीं। रविदास जी कहते हैं अब क्या करो राम जी के बिना किस की शरण लूं?

राम जी रामराम

शब्द।09

स्री राम नाम उच्चर मना ।
आगै जमदल विसम घना ।।
अवर पंच हम एक जना ।
किउ राखउ घर बाहर मना ।।
मारहि लूटे नीत नीत ।
किस आगै करी पुकार जना ।।
उसारि मरौली राखै दुआरा ।
भीतर बैठी सा धना ।।
अमृत केलि करै नित कामरा ।
अवर लूटेन सो पंच जना ।।
ढाह मड़ौली लूटया देहुरा साधन पकड़ि एक जना
जम डंडा गल संगल पड़िआ भाग गये से पंच जना।।
कामरा लोड़ै सुइना रूपा मित्र लोड़न सो खाधाता।
नानक पाप करै तिन कारगा ।
जासी जमपुर बाधाता ।।

415

DATE

शबद १०९ (भावार्थ)

हे मेरे मन तू राम नाम का उच्चारण कर। अति बड़ा भयानक जंगल है इस रूप है यह पांच चोर है यह कैसे भी घर बाहर नही रहने देते। यह दिन रात मारते है नित नित लूटते है। किस के आगे मैं पुकार करूँ। साधना का महल बनाया। बीच मे द्वार रखा, कामिनि नित प्रति आनन्द केल करती है। पांच चोर हेप लूटते है। साधना का महल गिरा दिया साधना को पकड़ लिया। जब जम का डंडा पड़ा तो यह पांचों जने भाग गये स्त्री सोना चादी चाहती है मित्र खाना पीना चाहते है। नानक जी कहते हैं इन के लिए तू पाप करता है तू जमपुर बांधा जायेगा।

राम जी राम राम

DATE

शबद ॥10

सुरि मन मित्र पिआरिआ मिलवेला हैइह।
जब लग जोबन सास है तब लग इह तन देह।
बिन गुण कम न आवही ढह ढेरी तन खेह।।
मेरे मन लै लाहा घर जा गुरमुख नाम सलाहिए।
तां हउमै निवरीआ॥
सुण सुणि गढण गंढिए लिखपढ़ बुझहि भार।
तृसना अहनिसि अगली हउमै रोग विकार।।
ओह वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमत पार।
लाख सिआणप जे करी लाख सिउ प्रीति मिलाप।।
बिन संगत साध न ध्रापिआ बिन नावै दुख संताप
हरि जप जीअड़े छुटिए गुरमुख चीन्है आप
तन मन गुर पै वेचिआ मन दीआ सिर नाल।
त्रिभवण खोजि ढंढोलिआ गुरमुख खोज निहाल
सतगुर मेल मिलाया नानक सो प्रभ नाल

राम जी राम राम

शब्द 110 (भावार्थ)

हे मेरे प्यारे मित्र मनजी सुनो, मिलने का यही समय है। जब तक स्वांस है यौवन है तब तक यह शरीर है। बिना गुरुओं के काम नहीं आना यह शरीर गिर कर राख की ढेरी बन जायेगा हे मेरे मन आओ अपना लाभ प्राप्त कर ले जा गुरमुख बन कर नाम जपेगा तो हउमै की आग निकल जायगी। सुन सुन कर मन को जोड़ते हैं लिवेश कर पढ़ कर भार बढ़ जाता है। तृष्णा और हउमै दोनों विकार हैं प्रभु तो बेपरवाह हैं तुल नहीं सकते गुरमत से कीमत पा सकते हैं। लाखे चतुराईयां करें लाखों से प्रीति मिलाप सौंं बिना संतो की स्यांत सन्तुष्ट नहीं होते नाम के बिना दुख और सताप है। हे जीव तो हरि नाम जप कर के छूट जायेगा। वह भी गुरमुख ही कर सकता है। तनमन गुरु के आगे बेच दो सिर भी अर्पण कर दो। गुरमुख ने विचार लिया सत्गुरु के मिलाप से यह प्रभु सदा साथ है।

DATE

शबद 111

हम कूकर तेरे दरबार भंउके आगे बदन पसार।
संता मानउ दूतां डानउ एह कुरबारी मेरी॥
दिवस रैण तेरे पांउ पलोसौं केस चवर कर फेरी।
पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तौ मिटिआ न जाई।
तेरे दुआरे धुनि सहज की माथै मेरे लगाई।
दागे होय तो रण मे जूझिह बिन दागे भग जाई।
साधु होए सो भगति पछानै हरि लेह खजाने पाई।
कोठरे मे कोठरी परम कोठी विचार।
गुर दीन्ही बसत कबीर को॥
लेवहो बसत सम्भार।
कबीर दी संसार को लीन्ही जिस मसतक भाग।
अमृत रस जिन पाइआ थिर ता का सोहाग।

राम जी राम राम

classmate

PAGE

DATE

शब्दसार (भवार्थ)

हम आपने स्वामी के कूकर हैं उन के आगे बढ़ु पसार कर भउकते हैं। यह माया संतो को मान जाती है कुतों को डान देती है। यह कटवारी है। मैं दिन रात इस के चरण पावन केसो से चवंर करु केशी लूं। हम आपके पूर्व जनम के सेवक हैं, अब हम नहीं फिर सकते। आपके द्वार की ध्वनि सहज ही मेरे माथे में बजती है। मेरे तो रगा में फूल कर बिना लड़े तो मर जायें। साधु वही है जो भगति पहचान लेता है उसे खजाने में डालता है। कोठरी में कोठरी है उस में परम विचार है कबीर जी कह रहे हैं मुझे सतगुरु जी ने दी है उसे मैंने सम्भाल कर रखा है। कबीर जी ने संसार को दी जिस के भाग्य में थी उन्होंने सम्भाल कर रख ली। जिन्होंने नामरूपी अमृत रस प्राप्त कर लिया उन का सोहणा अरता है। श्रीराम

शबद ॥2

सा मति देहु दइआल प्रभ जित तुम्हे आराधा ।
नानक मंगै दान प्रभ रेणा पग साधां ॥
जह जह पेखउ तह हजूर, दूर कतहु न जाइ ।
रव रहिआ सरबत्र मह मन सदा धिआइ ॥
ईत ऊत नही बिछुड़े सो संगी गनिए
बिनसि जाये जो निमख में, सो अल्प भाव भनिए ।
प्रतिपालै अपिआउ दे कछु ऊन न होई ।
सास सास समालदा मेरा प्रभ सोई ॥
अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जां का रूप ।
जप जप करहि अनंद जन अचरज अनूप ॥

राम जी राम राम
4.6.2010

221

शब्द112 (भावार्थ)

हे दयाल प्रभु आप मुझे ऐसी मति दो कि मैं आपकी ही आराधना करूं। नामक भी केवल संतो के चरणों की रज मांगते हैं। जहां २ देखूं मेरे प्रभु हाजरा हजूर दिखते हैं, दूर कहीं जाता है। सष्टि मे वह रमरण कर रहा है मन मे ही उन का ध्यान करो। जो इधर उधर कभी नहीं बिछुड़ता वही साथी है। जो एक निमिष मे बिछुड़ जाती है वह अल्प बुद्धि है। वह हमारी प्रतिपालना करते हैं किसी भी चीज की कमी नहीं रखते। सार सम्भाल करते हैं वही मेरे प्रभु हैं। वह अखिल अछेद अपार प्रभु है जिन का रूप भी बड़ा अचो है। बस उन का नाम जप जप कर आनन्द करें वह अचरज। अनूप हैं।

राधे जी भाग राम

classmate

DATE

शबद ॥3

मेरे हर जीउ सभ को तेरे वस।

असां जोर नाही जे किछ कर हम साकह ॥

जिउ भावै तिवंहि बखस ॥

कीता करणा सरब रजाइ।

किछ कीचै जे कर साकिए ॥

आपणा कीता किछु न होवहि।

जियों हर भावै तिउ राखहु ॥

सब जीअ पिंड दीआ तुध आपे।

तुध आपे कारे लाइआ ॥

जेहा तू हुकम करहि।

तह को करम कमावै ॥

जेहा तुध धुर लिख पाइआ।

पंच ततु कर तुध स्रिसटि सभ साजी ॥

कोई छेवा करहु जे किछ कीता होवै।

इकना सतगुर मेल तूं बुझावै इक मनमुख करह सो रोवह

हर की वडिआई हउ आख न सांका हउ मूरख मुग्ध नीचाणा

जन नानक को हरि बखश लै मेरे सुआमी

सरनागत पइआअजाण॥ ॥ २१६॥१३ (आशा)

राम जी राम राम

हे मेरे प्रभु! सब आपके बस मे है। हमारे मे कोई जोर नही हम कुछ कर सके जैसे भी हो हम बालक है, सब आपही का कीआ करता है। हम कुछ नही कर सकते। जैसे आप रखो तैसे ही रहना है। आपने ही यह जीव पिंड दिया इसे कर्म मे भी लगाया है। जैसा आपका हुक्म होता है वैसा ही हम कर्म करते हैं। जैसे आपने शुरु से लिखा है ऐसा ही पाते हैं। पांच तत्वो से सारी सृष्टी बनाई है कोई भी सेवा करो जो आप से करनी हो। एक को सतगुरु मिला देते है, एक मनमुख दुखी हो कर रोते है।

हरि की वड़ाई हम नही कह सकते। हम सरबत्र अनजान है। महाराज करमा रहे है प्रेम आप रख्या लो मैं अनजान आपकी शरण मे पड़ा हूं।

राम जी राम राम

DATE

शब्द 114

बाली रोवहि नाहि भतार ।

नानक दुनिआ सब संसार ॥

सहसु दान देइ इन्दु रूआइआ ।

परसराम रोविह घर आइआ ॥

अजै सो रोवहि भिखिआ खाई ।

ऐसी दरगह मिलै सजाई ॥

रोवहि राम निकाला भइआ ।

सीता लखमणा विछुड़ गइआ ।

रोवहि दहसिर लंक गवाये ॥

जिन्हि सीता आंदी डौरू वाई ।

रोवहि पांडव भये मजूर ।

जिन्ह के सुआमी रहत हदूर ॥

रोवहि जनमेजा खुइ गइआ ।

एकी कारण पापी भइआ ॥

रोवहि सेख मसाइक पीर । अंत काल मत लागै भीर ।

रोवहि राजे कन पड़ाइ घर घर मागै भिखिआ जाई

रोवहि किरपन संचहि धन जाये पंडित रोवहि गिआन गवाइ

225

DATE

मैनें नाऊ सोई जिस जाये

अउरी करम न लेवे लाइ ॥

रामजी राम राम

शब्द ११४ (भावार्थ)

लड़की रोती है कि मेरी शादी नहीं हुई नाम जी फरमाते हैं इस प्रकार सारा संसार डाँवा है। इन्द्र भी इतना दान देकर रोता है। परसराम भी घर आ कर रोता है। विषिया खाने वाले सारे रोते हैं। दरगाह में सजाये मिलती हैं। सीता लछमण राम से बिछड़ गई। लंका गवां कर रावण भी रोया। जिन्होंने ने सीता को धोखे से चोरी किया। पांडव भी मजदूर बने और रोये। जिन के स्वामी सदा हजूर थे। एक ही कारण से पापी हुआ वह भी रोया। सन शेख मसाइक पीर अंत समय तक भीड़ लगी। राजे कान्ने कड़ार चर भी रोये। घर घर भिक्षा मांगी। कंजूस धन गवां कर रोते हैं पंडित ज्ञान गवां कर रोते हैं।

DATE

शबद 115

मै अधुले हरि नाम लकुटी टोहणी।
रहउ साहिब की टेक न मोहै मोहणी॥
जह देखउ तह नालि गुर दिखालिआ।
अंतरि बाहरि भालि सबदि निहालिआ॥
सेवी सतिगुर भाइ नामु निरंजना।
तुधु भावै तिवै रजाइ भरमु भउ भंजना॥
जनमत ही दुखु लागै मरणा आइ कै।
जनमु मरणु परवाणु हरि गुण गाइ कै॥
हउ नाही तू होवहि तुध ही साजिआ।
आपे थापि उथापि सबदि निवाजिआ॥
देही भसम रुलाइ न जापी कह गइआ।
आपे रहिआ समाइ सो विसमादु भइआ॥
तू नाही प्रभ दूरि जाणहि सभ तू है गुरमुखि वेखि हदूरि अंतरि भी तू है
मै दीजै नाम निवासु अंतरि सांति होइ गुण गावै नानक दास सतिगुरु मति देइ।

227

DATE

शबद 115

(भावार्थ)

मैं अन्धा हूँ परन्तु मेरे पास हरि नाम की छड़ी है मुझे माया नहीं मोहित कर सकती। मन से हरि नाम कभी न भूले दिनरात उन का ध्यान करूं। जैसे कृपाधार रखें उसी में सुख प्राप्त करूँ। सतगुरु जी ने दिखाया हर जगह प्रभु मेरे अंग संग दिखते हैं। अंतर बाहर शबद को ढूंढ कर सुखी हो गया। सतगुरु की सेवा भाव से करो जो कि निरंजन है। आप की आज्ञा में ही रहना है सारे भरम भय नाश हो गये। जन्मते ही मरने का दुख भी याद आ गया। हरि के गुण गाने से जनम मरण स्वीकार हो जाये। मैं नहीं हूँ आप ही हैं आपने मुझे बनाया है आपने शबद से मुझे निवाज़ दिया है। आप ही वह समाया हुआ है निसमाद है। आप दूर नहीं हैं आप ही बाहर अन्दर हैं, नानक दास हर समय गुण सदा गाये। सेवा मांगते हैं।

classmate

शबद 116

प्रभ
ढाढी दर मंगता दर कदे न छोडे।
मन रता गोबिन्द संग सच भोजन जोड़े॥
प्रीति लगी हरि नाम सिउ एह हस्ती घोड़े।
राज मिलक खुसियां घणी धियार मुख न मोड़े॥
नानक मन तन चाउ एहो नित प्रभ को लोड़े

शबद 116
(भावार्थ) राम जी राम राम

प्रभु नाम मांगने वाला कभी भी प्रभु जी का दर नही छोड़ता। उस का सदा राम जी मे रहा रहता है, सच का भोजन लेता रहता है। नाम के संग जब प्रीति लग जाती है तो यह सारी माया झूठी हो जाती है। सारी खुशियां प्राप्त कर के भी प्रभु के ध्यान से मुख नही मोड़ता। महाराज जी फरमाते है मेरे मन तन मे चाऊ यही है कि मैं प्रभु से मुख कभी भी न मोड़ं।

DATE

कर कृपा प्रभु दीनदयाला

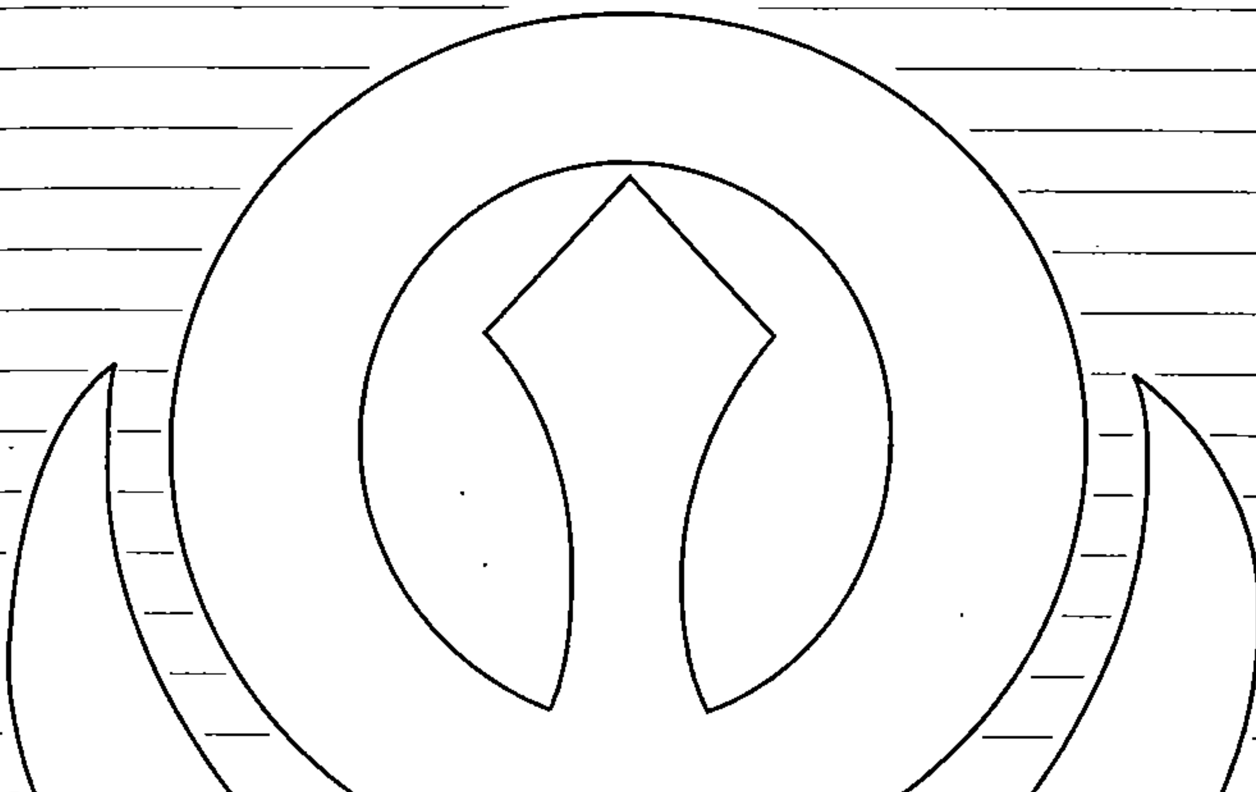

तेरी ओट पूर्ण गोपाला

शबद 117

जिस नो आइआ प्रेम रस।
तिसै ही जरणी ॥
बाणी उचरहि साध जन।
अमिउ चलहि झरणो ॥
ओथै अमृत वंडिए सुखिया हरि करणो।
जम के पंथ न पाइए फिर नाही मरणो॥
पेख दरसन नानक जीविआ।
मन अन्दर धरणो ॥

राम जी राम राम

231

शबद 117

(भावार्थ)

जिस को प्रेम रस आ गया है वही इस रस को जानता है। वह साधु जन बाणी उच्चारण करते हैं उस में अमृत रस भरता है। वहीं अमृत बाणी जाता है उससे मन को सुखी किया जाता है। वह जम के साथ नहीं जाता उस का आवागमन भी समाप्त हो जाता है। नानक जी फरमाते हैं कि मैं तो प्रभु जी का दर्शन कर के जीता हूं। मन मे प्रभु जी को ही धारण रखता हूं।

राम जी राम राम

ओरम

29 5. 2010

classmate

PAGE

DATE

शबद 118

सरब मनोरथ राज सुख रस।
सद खुसियां कीरतन जप नाम।।
तृष्णा बूझे हरि कै नाम।
महां संतोख होवै गुर बचनी।
प्रभ सिउ लागै पूरन धिआन।।
महा कलोल बुझहि माइआ के।
कर किरपा मेरे दीनदयाल।।
अपना नाम देह जप जीवां।
पूरन होए दास की घाल।।
जिस के करम लिखिआ धुर करतै।
नानक जन के पूरन काम।।

राम जी राम राम

233

DATE

शब्द 118

(भावार्थ)

सब प्रकार के राज सुख खुशियों कीर्तन से नाम जप से प्राप्त होती हैं। हरि के नाम सारी तृष्णाएं समाप्त हो जाती हैं। गुरु के वचनों से महासुख की प्राप्ति होती है। प्रभु में पूरा ध्यान लग जाता है। माया के सब खेल कलोल समाप्त हो जाते हैं। हे मेरे दीन-दयाल जी कृपा करो। आप अपना नाम देओ तो मैं जीऊँ, दास की सारी चालना पूरी हो जाये। जिस के कर्मों मे गुरु से लिखा है उस जन के सब काम पूरे हो जाते हैं।

राम जी रामराम

श्रीराम

DATE

शबद ॥

बलिओ चराग अंधियार महि।
सभ कलि उधरी इक नाम धरम॥
प्रगट सगल हरि भवन महि।
जन नानक गुर पारब्रहम॥
प्रभ दातउ दातार परिओ जाचक इक सरना।
मिलै दान संत रेण जिह लगि
भउजल तरना॥
बिनति करउ अरदास सुनहु जे ठाकुर भावै।
देहु दरस मन चाउ भगति इहु मन ठहरावै॥

राम श्री राम राम

235

शब्द 119

(भावार्थ)

ज्ञान का दीपक के जलने से सारा अज्ञान रुपी अंधेरा दूर हो गया। कलियुग में एक नाम ही परम है। सारे भवन में उजागर हो गया। गुरु पारब्रह्म नानक जी प्रगट हो गये। प्रभु दाताओं के भी दाता हैं मैं भिखारी उन की शरण में पड़ा हूं। संतो की चरण रज मिलती रहे हम भव सागर से तर जाये। हे ठाकुर अगर आप को भा जाये तो विनती करूं। मेरे मन में प्रभु दरशन की चाह भर दो तां की मेरा मन स्थिर हो जाये।

राम जी शरणम

अशोक

classmate

PAGE

DATE

शबद।20

तू साझा साहिब बाप हमारा।
नउनिधि तेरै अखुट भंडारा॥
जिस तू देहि सो तृप्त आघावै।
सोई भगत तुम्हारा जीओ॥
सा रुत सुहावी जित तुध समाली।
सो कम सुहेला जो तेरी घाली॥
सो हृदय सुहेला जित हृदय तू वुठा।
सजना के दातारा जीओ॥
सभु को आखै तेरी बैणा।
घर घर अंतर तू है वुठा॥
सभै सामीवाल सदाइन तू किसे न दीसै, बाहरिओ
तू आपै गुरमुख मुकति कराहै।
तूं आपे मनमुख जनम भवाए॥
नानक दास तेरै बलिहारी।
सब तेरा खेल दसाहरा जीओ॥

PAGE

classmate

DATE

शब्द 120

(भावार्थ)

आप मेरे साँई साहिब बाप हो। आप के नौ निधियों के भंडार भरे हैं। जिस को आप देते हो वही तृप्त होता है। वही आप का भक्त है। वही घर सुन्दर है जिस में मै आप को याद करता हूं। आप की भावना ही सुन्दर काम है। जिस के हृदय मे आप प्रसन्न हो वही सुखी हृदय है। आप सब के दाता जी हो। घट घट मे आप ही व्यापक हो सभी आप के साझीदार हैं। आप सब मे हो। आप ही गुरमुखो को मुक्त कर देते हो। आप मनमुखो को जन्म मरण मे डाल देते हो। नानक दास जी अपने प्रभु पर बलिहार जाते हैं। यह सारा संसार आप का ही खेल तमाशा है

राम जी राम राम

classmate

कृपा - धाम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

राम जी राम राम

कृपा धाम

C-2B, Janak Puri, New Delhi-110058. Ph. : 25517225